5

हमें रचनात्मक शक्ति का अनुभव हुआ

मंगलवार, 30 नवम्बर

पहले की ही तरह दिसम्बर माह में सामाजिक अध्ययन के पीरियड का उपयोग हम क्रिसमस पर खेले जाने वाले नाटक की तैयारी के लिए करेंगे।

हम एक सतत बदलती दुनिया में निवास करते हैं। ऐसी दुनिया में प्रभावी ढंग से बने रहना हो तो हमें इसका सामना रचनात्मक तरीकों से करना होगा। हम सब में रचनात्मक शक्ति के ऐसे संसाधन हैं जिन्हें हमने टटोला तक नहीं है। इस रचना शक्ति को मुक्त करने से पहले हमें उन तमाम बन्धनों को तोड़ना होगा जो हमने आलोचना के डर से या हीन बोध के कारण बना लिए हैं। पाठ्यचर्या को विकसित करने में कुछ चीज़ें चुननी पड़ती हैं। यह स्कूलों की मुख्य ज़िम्मेदारी होती है।

इन शर्मीले, झिझक से भरे लड़के-लड़कियों को स्वयं को रचनात्मक व्यक्तियों के रूप में पहचानने की ज़रूरत है। आवश्यकता है कि उनमें आत्मविश्वास व सन्तुलन विकसित हो और वे मुक्त हो जाएँ। यह काम हम रचनात्मक नाटकों के माध्यम से करेंगे क्योंकि मैं स्वयं को इस माध्यम में काफी सहज पाती हूँ।

बुधवार, 1 दिसम्बर

आज सुबह मैंने बच्चों को एक फ्रांसीसी किंवदन्ती "नन्हे वॉल्फ की खड़ाऊँ" सुनाई। मैंने उसमें यथासम्भव बारीक वर्णन जोड़ा। सभी दृश्यों के बारे में विस्तार से बताया और रोचक वार्तालाप सुनाए। बच्चों को कथा पसन्द आई।

कुछ देर हमने यह चर्चा की कि इस कहानी को कैसे बढ़ाया जा सकता है और

उसके कौन-कौन से दृश्य हो सकते हैं।

पहला दृश्य वह होगा जिसमें नन्हा वॉल्फ अपनी मौसी के साथ एक असज्जित टूटे-फूटे कमरे में रात का खाना खा रहा है। समूचे दृश्य में वॉल्फ की मौसी उसे ताने मारेगी, क्योंकि वह उससे नफरत करती है और उसे एक बोझ मानती है। नन्हा वॉल्फ बार-बार मौसी से आग्रह करता है कि उसे भी उसके स्कूली साथियों के साथ स्तुति गीत गाने दिया जाए। आखिरकार मौसी उसे अनुमति दे देती है। एल्बर्ट व कैथरीन को इस दृश्य के संवाद लिखने के लिए चुना गया। उनका प्रयास बेजान व बेरंग रहा। बच्चों को लगा कि कैथरीन अपने चरित्र को बढ़ा-चढ़ा रही है, जो वास्तविक नहीं लगता। एल्बर्ट तो वॉल्फ में ढल ही नहीं पाया, वह एल्बर्ट ही बना रहा। इसके बाद हमने मेरी और विलियम के साथ यह कोशिश दोहराई। विलियम के संवादों को सुन बच्चे चटक हो ध्यान देने लगे। उन्होंने उसी वक्त यह तय कर लिया कि विलियम ही वॉल्फ की भूमिका के लिए सही रहेगा। शेष बच्चों ने भी इन भूमिकाओं को अदा करने की कोशिश की और क्रमशः संवाद जुटने लगे तथा पात्रों का चरित्र विकसित होने लगा।

मैं बच्चों के चेहरों पर आतुरता व तन्मयता के भाव देखती रही। कोई भी बच्चा शर्माकर ठिठिया नहीं रहा था और कई बच्चे इस प्रक्रिया में काफी आक्रामकता से हिस्सा ले रहे थे।

गुरुवार, 2 दिसम्बर

हमने नाटक रचने का काम जारी रखा और पात्रों के चरित्रों पर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान देने की कोशिश की। वॉरेन नन्हा वॉल्फ बना और यों अभिनय करने लगा मानो वह बिगड़ैल, मोहताजी बच्चा हो। बच्चों को लगा कि यह सही नहीं है। वॉल्फ भला कैसा लड़का है? उस जैसा कोई लड़का अपनी मौसी से क्या कहेगा? कैसे कहेगा? ठीक इसी तरह के प्रश्न वॉल्फ की मौसी के बारे में भी हमने पूछे। हमने कुछ देर इस पर भी बातचीत की कि किस प्रकार कोई अभिनेता या अभिनेत्री किसी चरित्र का ईमानदारी से चित्रण कर पाते हैं। वे उस चरित्र को इतनी अच्छी तरह समझने लगते हैं कि खुद को भुलाकर वह पात्र ही बन जाते हैं। बच्चे *करेन्ट इवेन्ट्स* में पिछले दिनों यह पढ़ते रहे हैं कि पॉल म्यूनी जब अभिनय करता है तो पहले काफी समय उस चरित्र के विषय में शोध करने में बिताता है। अगली बार कैथरीन और विलियम ने अपनी-अपनी भूमिकाएँ

निभाते समय इतना अच्छा प्रदर्शन किया कि तालियाँ बज उठीं। भावनाओं की अभिव्यक्ति अच्छी होने के बावजूद संवाद की भाषा अनगढ़ थी। हमने कुछ समय इस चर्चा में बिताया कि दर्शकों तक सही भावनाएँ सम्प्रेषित करने के लिए सटीक शब्दों का उपयोग ज़रूरी होता है। हमने वाक्यों की लम्बाई पर चर्चा की। बच्चे इतने छोटे वाक्यों का इस्तेमाल कर रहे हैं कि संवाद टूटा-बिखरा सा लगता है।

शुक्रवार, 3 दिसम्बर

आज हम दूसरे दृश्य पर पहुँचे और हमने कथानक पर ध्यान देने की चेष्टा की। हमने सोचा कि यह सड़क का दृश्य होगा जहाँ वॉल्फ अपने सहपाठियों से मिलता है। मास्टरजी का इन्तज़ार करते हुए बच्चे वॉल्फ पर छींटाकशी करते हैं। मास्टर साब के आते ही सब गिरजे की ओर बढ़ जाते हैं और वॉल्फ को पीछे-पीछे आने के लिए छोड़ देते हैं। रैल्फ ने मास्टर साब बनने की इच्छा जताई और भूमिका में काफी कुछ जोड़ा। एडवर्ड और जॉर्ज ही दो लड़के थे जिन्होंने योगदान करने में अनिच्छा दिखाई। मुझे लगता है कि यह झिझक के कारण है, न कि अरुचि के कारण। जब हमने कथानक पर बातचीत कर स्थिति समझ ली, तब कई लड़के कमरे के अगले भाग में खड़े हो गए और उन्होंने संवादों पर काम किया। यह सब धीमी रफ्तार से चला क्योंकि लड़के भाषण देने लगे और एकालाप में उलझने लगे। रूथ ने सुझाया कि वे एक-दूसरे की बात सुनें और अपना संवाद पिछले सूत्रों से जोड़ें। दूसरी बार चेष्टा करने से पहले हमने यह विचार किया कि वे क्या-क्या कह सकते हैं और इस बार वार्तालाप बेहतर रहा।

सोमवार, 6 दिसम्बर

बच्चे तीसरे दृश्य के बारे में बड़े उत्साहित हैं। यह गिरजाघर का दृश्य है और बच्चों को उम्मीद है कि वे इसे खूबसूरत बना सकेंगे। हमें गिरजे का बाहरी हिस्सा दर्शाना होगा क्योंकि गिरजे की सीढ़ियों पर ही एक छोटा बच्चा सोता हुआ दिखाया जाना है। बच्चों को लगा कि दर्शकों को लगातार प्रार्थना के दौरान पत्थरों से बनी गिरजे की दीवार देखना पसन्द नहीं आएगा। उन्होंने रंगीन काँचों की खिड़की की योजना बनाई है ताकि दर्शक उसके पीछे प्रार्थना करते लोगों की छाया देख सकें।

गिरजे से निकलने के बाद लड़कों की जो बातचीत होती है, हम उस पर काम करने लगे। वॉल्फ, जो सबसे अन्त में गिरजे से निकलता है, यह गौर करता है कि सीढ़ियों पर सोए बच्चे के पैर नंगे हैं। वह अपना एक जूता बच्चे के पास छोड़ देता है ताकि जब क्रिसमस की पूर्व संध्या पर बाल यीशु वहाँ से गुज़रे तो वह उस बच्चे के लिए कोई तोहफा छोड़ दे। बच्चों को अपने-अपने चरित्र के अनुरूप संवाद बोलने में कठिनाई हुई। जो बच्चे वॉल्फ को ताने मार रहे थे उनकी प्रतिक्रियाएँ सीढ़ी पर सोए बच्चे के प्रति कैसी होंगी? क्या वे उदासीन रहेंगे? क्या उनमें उत्सुकता जगेगी या फिर वे क्रूरता दर्शाएँगे? क्या सभी लड़कों की प्रतिक्रियाएँ एक जैसी होंगी? इस बिन्दु पर हमने हरेक लड़के की पृष्ठभूमि की कल्पना की और उसकी एक जीवन कथा बना डाली। इसमें बड़ा मज़ा आया। हरेक लड़के ने उस लड़के की भूमिका चुनी जिसे वह ठीक से समझ सका हो। तब हमने फिर से दृश्य खेला। इससे बहुत फर्क पड़ा और बच्चे अपने काम से खुश हो गए। वे नाटक को लेकर बेहद उत्साहित होते जा रहे हैं और दिन भर नए-नए सुझाव रखते हैं। उन्होंने काम के दौरान इतनी बार टोकाटाकी की कि अन्ततः मुझे कहना पड़ा कि वे अपने विचार लिख डालें और तब दें जब हम नाटक का अगला सत्र करें।

आजकल दिन का कार्यक्रम सीधा-सरल है। सुबह तकरीबन घण्टे भर हम नाटक पर काम करते हैं। छोटे बच्चे लगभग आधा घण्टा हमारे साथ रहते हैं। वे योगदान करते हैं या सिर्फ देखते-सुनते हैं। इसके बाद कोई बड़ा बच्चा उन्हें हॉल में ले जाता है। वे बच्चों को बाइबल के "ल्यूक" अध्याय में दी गई क्रिसमस कथा सिखा रहे हैं, जो बच्चे नाटक में गिरजे के दृश्य के समय सुनाएँगे। जब वे थकने लगते हैं तो उनका प्रभारी उन्हें या तो कुछ पढ़कर सुनाता है या वे परिचित स्तुति गीतों का अभ्यास करते हैं।

सुबह की शारीरिक अध्ययन कक्षा के बाद कमरे में शान्ति छा जाती है और सभी पठन का काम करने लगते हैं। पठन समाप्त करने के बाद बच्चे क्रिसमस उपहार बनाने में जुट जाते हैं। बड़े बच्चे पिन-ट्रे या सिलाई टोकरियाँ और रूमाल रखने के डिब्बे बना रहे हैं। छोटे बच्चे कनस्तरों और माचिस के डिब्बों के लिए टिन पर चित्रकारी कर रहे हैं। कुछ छोटे लड़के प्लाईवुड से ब्रेड काटने के लिए तख्ते बना रहे हैं।

सप्ताह में दो दिन साढ़े ग्यारह बजे स्वास्थ्य की कक्षाएँ होती हैं और शेष तीन दिन भूगोल और इतिहास की, ताकि ताज़ा घटनावृत्त पर जो चर्चाएँ हों वे ठोस जानकारी पर आधारित हों। स्वास्थ्य के पाठों के दौरान छोटे बच्चे चर्चा सुनते भी हैं और उसमें भाग भी लेते हैं। पर शेष तीन दिन, अगर मौसम साथ दे तो वे खेलघर में खेलते हैं। बड़े बच्चे बारी-बारी उनके साथ खेलघर में समय बिताते हैं। वे योजना बनाने में नन्हों की मदद करते हैं पर उनके खेल में हस्तक्षेप नहीं करते। वे पढ़ते हैं या अपना कोई काम करते रहते हैं, पर एक नज़र नन्हों पर भी रखते हैं ताकि वे गलत आदतें न पाल लें।

दोपहर के खाने के बाद हम पन्द्रह मिनट आराम करते हैं और फिर आधे घण्टे के लिए स्तुति गीतों का अभ्यास करते हैं। जिस समय छोटे बच्चे वर्तनी और गणित का अभ्यास करते हैं, बड़े बच्चे स्वास्थ्य या समसामयिक घटनाओं पर काम करते हैं और उसके समाप्त होने पर अपने क्रिसमस उपहारों पर काम शुरू कर देते हैं। दिन का अन्त हमेशा की तरह बड़े बच्चों के वर्तनी व गणित के अभ्यासों से होता है।

मंगलवार, 7 दिसम्बर

आज हमने नाटक के अन्तिम दो दृश्यों की रूपरेखा बनाई। चौथे दृश्य में वॉल्फ को उसकी मौसी से फटकार सुननी पड़ती है क्योंकि वह अपना एक जूता किसी अजनबी बच्चे को दे आया है। मौसी कहती है कि बाल यीशु उसके बचे हुए एक जूते में कुछ ऐसा छोड़ जाएगा जिससे सुबह उसकी पिटाई की जा सके। अन्तिम दृश्य में वॉल्फ और उसकी मौसी सुबह उठने पर पाते हैं कि उनके अलाव के पास ढेरों उपहार रखे हैं, और साथ हैं वॉल्फ के दोनों जूते। उनके घर के बाहर गाँव में शोरगुल मचा है क्योंकि पूरा गाँव उन लड़कों पर हँस रहा है जिन्होंने बेहतरीन उपहारों की उम्मीद की थी, पर जिन्हें सिर्फ छड़ियाँ मिली थीं। इसी समय एक पादरी आता है और सबको बताता है कि पिछली रात गिरजे की सीढ़ियों पर जहाँ एक बच्चा सोया पड़ा था, ठीक उसी जगह उसे सोने व रत्नों से जड़ा एक गोल घेरा मिला। गाँववासी चमत्कार की बात सुन श्रद्धानत हो जाते हैं। बच्चों को यह अन्तिम दृश्य अच्छा लग रहा है और उनमें से किसी ने इसकी विश्वसनीयता पर सवाल नहीं उठाया है। फ्रैंक ने पादरी बनने की इच्छा जताई और भूमिका समझदारी के साथ अदा की। अब पूरे नाटक की रूपरेखा

तैयार है। हमें उसकी बारीकियों में जाकर सावधानी से योजना बनानी है।

बुधवार, 8 दिसम्बर

हमारा ज़्यादातर समय अन्तिम दृश्य के संवादों को बनाने में लगा। जॉर्ज को छोड़ सभी नाटक में भाग ले रहे हैं। जॉर्ज ने कहा कि वह दृश्यों की सज्जा का काम करेगा। हमने उसे मंच प्रबन्धक बना दिया है।

हवा में क्रिसमस की भावना है। हम सब इससे प्रफुल्लित हैं और दूसरों के प्रति चिन्तनशील हैं। लड़के आज दोपहर बाज़ार गए ताकि खिड़कियों की गोल मालाओं की सामग्री ला सकें। पर काम करते समय वे दबे स्वरों में बातचीत करते रहे। अमूमन दोपहर का घण्टा गुल-गपाड़े से भरा होता है, पर आज की शान्ति उसके विपरीत थी।

गुरुवार, 9 दिसम्बर

नाटक बच्चों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। आज कैथरीन एक पुरानी काली ड्रेस लेकर आई जो उसके अनुसार वॉल्फ की मौसी के लिए बिलकुल सही थी। हमने दूसरे पात्रों की पोशाकों पर भी बात की। उसमें अधिक कठिनाई नहीं होनी चाहिए। बड़ी समस्या तो दृश्य सज्जा की है। बच्चों ने विभिन्न दृश्यों के चित्र बनाए ताकि यह समझ आए कि हमें किन-किन चीज़ों की ज़रूरत है और उन्हें कैसे सजाना होगा।

शुक्रवार, 10 दिसम्बर

हमने अपनी मेज़-कुर्सियाँ सामने से हटाकर एक किनारे रख दीं, ताकि नाटक के अभ्यास और मंच सज्जा की वस्तुओं के लिए जगह बनाई जा सके। लड़के लकड़ी की कुछ पट्टियाँ ले आए और एक बड़े से अलाव का ढाँचा बनाने लगे।

हमारा अधिकांश समय पहले दृश्य पर खर्च हुआ। आज हमने तय किया कि विलियम और कैथरीन वॉल्फ और उसकी मौसी की भूमिकाएँ निभाएँगे। बच्चे अपने संवाद याद नहीं कर रहे हैं। जब वे उन संवादों पर बातचीत कर निर्णय लेते हैं तो मैं उन्हें लिख डालती हूँ और अब तक उनका जो स्वरूप बना है उसे पढ़कर सुना देती हूँ। तब वे शुरू करते हैं और अभ्यास के दौरान उन्हें सुधारने की कोशिश भी करते हैं।

बड़े लड़के अभिनय को बड़े गौर से देखते रहे। वे विचार कर रहे थे कि अलाव किस स्थान पर रखा जाएगा। आखिरकार उन्होंने तय किया कि वे उसे पीछे की ओर कुछ तिरछा कर लगाएँगे ताकि दर्शकों को अलाव व लोहे की केतली साफ दिखाई दे। इससे मंच पर एक मेज़ और एक बेंच की जगह बची रहेगी।

सोमवार, 13 दिसम्बर

लड़कों ने अलाव के ढाँचे को भूरे कागज़ से ढँक दिया और उस पर पत्थरों को चित्रित करना शुरू कर दिया ताकि वह सचमुच का अलाव लगने लगे। कुछ दूसरे बच्चे मेज़ बनाने के काम में जुट गए।

बच्चों ने अब तक पाँच फ्रांसीसी स्तुति गीत सीख लिए हैं जो नाटक के दौरान दो हिस्सों में गाए जाएँगे। हमने लोकप्रिय स्तुति गीतों का काफी अभ्यास किया, जो हमारे दर्शक हमारे साथ गाएँगे। मेरे एक संगीतज्ञ मित्र कल हमारे साथ अभ्यास के लिए आने वाले हैं, सो हम उनके लिए तैयार रहना चाहते हैं।

मंगलवार, 14 दिसम्बर

आज काफी समय गाने में बीता। बीच-बीच में हम केवल कुछ देर सुस्ताने भर को रुकते थे । बच्चे चैलो वाद्य से मोहित थे। श्री रैपल ने बच्चों को सरल व मज़ाकिया लहज़े में बताया कि चैलो भी एक तार वाद्य है और उसे कैसे बजाया जाता है। बच्चों ने तमाम सवाल दागे। लड़कों ने ही अधिक रुचि दिखाई।

हमने नौ स्तुति गीत पियानो व चैलो की संगत में गाए और तब हमें उन्हें दोहराना भी पड़ा। बच्चे गाने-बजाने से बिलकुल नहीं उकताए। कुछ समय मेरी ने छड़ी पकड़ संगीत निर्देशन किया और फिर सोफिया ने। दोपहर बाद जब काउंटी के अधीक्षक श्री एटवुड आए तो हम उनके लिए भी स्तुति गीत गाना चाहते थे। हमने कुछ गीत हार्मोनिका पर बजाए क्योंकि श्री एटवुड कहते हैं कि यह उनके पसन्दीदा वाद्यों में एक है। हम स्कूल खत्म होने के बाद हार्मोनिका बजाने का अभ्यास करते रहे हैं।

नन्हे बच्चे दो बजे के बाद घर लौटना ही नहीं चाहते थे। उन्होंने चिरौरी की कि बड़े बच्चे जितनी देर रुकते हैं उन्हें भी तब तक रुकने दिया जाए। छोटे बच्चे संगीत सभाओं के शिष्टाचार को तो समझते नहीं हैं। सो अगर वे इतनी देर

चुपचाप, बिना कुर्सियाँ सरकाए बैठे रहते हैं तो सिर्फ इसलिए कि उनकी रुचि वास्तविक है। रैल्फ की नज़र श्री रैपल पर से एक बार भी नहीं हटी। जैसे ही एक गीत खत्म होता वह अपनी सबसे अच्छी मुस्कान चेहरे पर लाता और कहता, "हमारे लिए एक और बजाइए ना।" मुझे लगा मानो नई सहस्त्राब्दी का आगमन हो गया हो!

बुधवार, 15 दिसम्बर

आज बच्चों को शान्त-स्थिर रखना कठिन रहा। वे लगातार गाते रहना चाहते थे। मैंने उन्हें लैटिन शब्दों वाला एक पुराना लैटिन स्तुति गीत "रानी पादरिन" सिखाया। हमें लगा कि गिरजे के दृश्य के साथ यह सटीक रहेगा। गिरजे की प्रार्थना कैसे होगी यह भी हमने तय किया।

इस दृश्य की मंच सज्जा की सामग्री की तैयारी लड़कियों ने शुरू कर दी है। उन्होंने हमारे कठपुतली मंच को भूरे कागज़ से लपेटा और उसमें दो खिड़कियों के चित्र बनाए। लड़के दूसरे दृश्य के लिए स्ट्रीट-लैम्प बना रहे हैं। उनकी योजना है कि दूसरे दृश्य में मंच पर पूरा अँधेरा होगा और सिर्फ खम्भे से लटका लालटेन टिमटिमाएगा।

गुरुवार, 16 दिसम्बर

आज बर्फीली ठण्ड थी और छोटे बच्चे घरों से निकले ही नहीं। इससे हमें स्कूल को एक कार्यशाला में बदल देने और सामग्री तैयार करने का बढ़िया अवसर मिल गया। लड़के एक ऐसा स्ट्रीट-लैम्प बनाने में सफल रहे जैसा हमें अक्सर क्रिसमस कार्डों पर नज़र आता है। वह जिस खम्भे से लटका होगा वह लड़कों से भी लम्बा है। उन्होंने उसे काफी मज़बूती से बनाया है ताकि किसी दुर्घटना का खतरा न रहे। फ्रैंक ने हमें निर्देश दिए कि दृश्य खत्म होने के बाद उसे खम्भे से उतारने से पहले लैम्प को बुझाना है।

शुक्रवार, 17 दिसम्बर

लड़कियों ने गिरजे की खिड़कियों का डिज़ाइन भूरे कागज़ पर काट लिया और सूराखों वाली जगहों पर अलग-अलग रंगों के सेलोफेन कागज़ के टुकड़े चिपका दिए। छोटे बच्चे इस प्रक्रिया को अचरज और प्रशंसा से देखते रहे।

सोफिया कुछ कदम पीछे हटी और बोली, "ज़रा सोचिए, मिस वेबर, इतनी सारी मेहनत की जा रही है और लोग इसे सिर्फ पाँच या दस मिनट ही देखेंगे।" इस पर पास खड़ी डॉरिस ने तल्खी से जवाब दिया, "हाँ, पर इसे जल्दी से भूलेंगे नहीं।" अपने अन्तस में कहीं गहरे मुझे शिद्दत से यह लगता है कि हमारा इस महीने का काम बेकार नहीं जाएगा।

सोमवार, 20 दिसम्बर

बच्चे आज क्रिसमस का पेड़ लेने गए और एक बारह फुटा देवदार लेकर लौटे। छोटे बच्चों ने उसे सजाने के लिए कुछ चीज़ें बनाई हैं और हमने दोपहर बाद उसकी काट-छाँट की। बच्चों ने अपने माता-पिता के लिए जो उपहार बनाए हैं उन्हें हमने रंगीन कागज़ों में लपेटा और पेड़ के नीचे रखा।

मंच सामग्री को अन्तिम रूप दिया गया और हमने नाटक के कुछ अनगढ़ हिस्से और माँज दिए।

मंगलवार, 21 दिसम्बर

आज हमने समूचे कार्यक्रम को ठीक उसी क्रम में किया जिस क्रम में गुरुवार रात वह प्रस्तुत किया जाएगा। सामान हटाने-धरने में काफी कठिनाई हो रही है क्योंकि हमारा कक्ष काफी छोटा है। हरेक व्यक्ति दूसरों की राह में अटकता रहा, पर मैंने एक भी नाराज़गी भरी शिकायत न सुनी। वे कहते रहे, "हेलेन, मेहरबानी से एक ओर सरक जाओ," या "ज़रा सावधानी से, कहीं गिरजे की खिड़की पर तुम्हारी कोहनी न लग जाए।" इसके बाद हम सब ने तसल्ली से बैठकर योजना बनाई कि मंच सज्जा की चीज़ें कैसे उठाई-धरी जाएँगी। हरेक बच्चे को बताया गया कि उसकी ज़िम्मेदारी क्या है। आज दोपहर हमने पूरा प्रदर्शन फिर से दोहराया और मैं प्रशंसा से भरी दर्शक बन आराम से पीछे बैठी सब कुछ देखती रही।

बुधवार, 22 दिसम्बर

आज हमने अपनी आवाज़ों पर खास ध्यान दिया। हमने नाटक के कुछ संवादों का अभ्यास किया ताकि कुछ शब्दों पर बल दिया जाए और उनके अर्थ रेखांकित हों। हमने कोशिश की कि हम सही भावनाएँ सम्प्रेषित कर सकें। हमने

"डाउन" (नीचे) जैसे शब्द में स्वर तथा "नथिंग" (कुछ नहीं) जैसे शब्द में व्यंजन के उच्चारण का अभ्यास किया। जिन संवादों से क्रोध, आश्चर्य, मखौल उड़ाना आदि दर्शाना था, हमने उनका अभ्यास किया ताकि वे वास्तविक लगें।

गुरुवार, 23 दिसम्बर

सुबह हमने एक बार फिर से कार्यक्रम का अभ्यास किया और तब कमरे की सफाई कर उसे रात के लिए व्यवस्थित किया। रात को हमारा नन्हा कक्ष गर्वीले माता-पिता व मित्रों से भर गया। नौजवान कमरे के पिछवाड़े ृंखला-सी बनाए थे। वे प्रत्येक गुरुवार को शालाभवन में अपनी बैठक करते रहे हैं। पिछली बैठक में मैंने उन्हें बताया था कि बच्चों ने नाटक की तैयारी में कितनी मेहनत की है, और उनके लिए इसका क्या मतलब है। मैंने उनसे मदद माँगी कि वे नाटक वाले दिन कक्ष में कोई गड़बड़ न होने दें। क्योंकि सभी बच्चों को यह पक्की तरह पता था कि उन्हें क्या-क्या करना है, मैं भी दर्शकों के बीच बैठ गई और यों मुझे नौजवानों की शक्लें देखने का मौका भी मिला। वे बच्चों का प्रदर्शन देख आश्चर्यचकित और खुश हुए और कई बार उनके चेहरों पर विस्मय का भाव भी नज़र आया कि उनके ही छोटे भाई-बहन वास्तव में यह सब कर रहे थे।

नाटक के बाद जब सामूहिक गायन हो रहा था, एडवर्ड का बड़ा भाई, जो किसी समय स्कूल के कार्यक्रमों में खलल डालने में नेतृत्व करता था, बाहर गया और उसने सांता क्लॉज़ (Santa Claus) की पोशाक पहन ली। वह घण्टियाँ बजाता अन्दर घुसा और बच्चे उसे फौरन पहचान गए। उसे सभी उपस्थित लोगों को उपहार बाँटते देख बच्चे बेहद खुश हुए। डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने बच्चों को मीठी गोलियाँ और सन्तरे बाँटे।

बेहद खुशगवार शाम बीती। सभी उपस्थित स्त्रियों, पुरुषों व बच्चों ने कार्यक्रम में खुलकर शिरकत की।

कार्यक्रम खत्म होने के बाद एडवर्ड का भाई (सांता क्लॉज़) और मैं कुछ दूसरे बड़े बच्चों के साथ स्टेशन वैगन और मेरी कार में ठुँस लिए और हमने समूची बस्ती के हरेक घर में जाकर स्तुति गीत गाए। हमें सभी घरों में अन्दर आमंत्रित किया गया और खाने को केक व मीठी गोलियाँ दी गईं। सभी माता-पिता हमारे लिए तैयार थे; हमारा राज़ खुल गया था।

6

हमने अपने समुदाय का अध्ययन किया

शनिवार, 12 फरवरी

क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान बच्चों को और मुझे अपने क्षेत्र के रोमांच को अनुभव करने का दुर्लभ मौका मिला। यह साल 1787 के अध्यादेश की 150वीं जयन्ती का वर्ष है, जब उत्तर-पश्चिम क्षेत्र को खोला गया था। इस अवसर का उत्सव मनाने के लिए नौजवानों की एक टोली मैसाच्युसेट्स से ओहायो तक ठीक पायोनियरों की तरह यात्रा कर रही है। वे यात्रा के दौरान जगह-जगह रुकते हैं और अपनी प्रस्तुति देते हैं। श्री हिल ने और मैंने बड़े बच्चों को यह सब दिखाने के लिए वाहन व्यवस्था कर दी। उस नाट्य प्रस्तुति में हमने देखा कि नौजवानों ने कायदे-कानून बनाए ताकि नए क्षेत्र में पहुँचकर वे उनके अनुसार कामकाज चलाएँ। बच्चे नए कानूनों को बनाने के प्रति उत्साह और उनको लेकर हुए वाद-विवाद से बेहद प्रभावित हुए। कैथरीन ने कहा, "अरे! यह सब तो ठीक वैसा ही है जैसे हम अपने सहायक क्लब की बैठकों में अपने लिए नियम बनाते हैं।"

बिचले समूह के बच्चे नौजवानों के कपड़ों, उनके यात्रा के तौर-तरीकों और यात्रा के दौरान आने वाली कठिनाइयों में रुचि दिखा रहे थे। उन्होंने उत्तर-पश्चिमी हिस्से को नक्शे में देखा और वह राह देखी जिस पर ये नौजवान चल रहे हैं। एल्बर्ट जानना चाहता था कि पायोनियरों ने इस भू-भाग को क्यों चुना। क्या वे मैसाच्युसेट्स से चलने से पहले ही इसके बारे में जानते थे? पर बड़े बच्चों की रुचि कानूनों और उन्हें बनाने की प्रक्रिया में अधिक थी।

बच्चे इस सब पर अधिक जानकारी एकत्रित करने के लिए रुचि अनुसार दो

दलों में बँट गए। दोनों समूह चर्चाओं और रिपोर्टों के लिए मिलते भी रहे।

बिचले समूह के बच्चों ने उत्तर-पश्चिम में आ बसने पर एक चलचित्र बनाया। जिस समय वे इस विषय पर पढ़ रहे थे, शोध कर रहे थे, उन्होंने महत्वपूर्ण तथ्य दर्ज कर लिए थे। चलचित्र बनाते समय उन्होंने इन्हीं तथ्यों का उपयोग किया। बड़े बच्चों ने 1787 के अध्यादेश (Ordinance of 1787) का अध्ययन किया। हमने कुछ समय इस बात पर सोचने-विचारने में लगाया कि मुट्ठी भर साधारण लोग किस प्रकार एकत्रित हुए ताकि यह तय कर सकें कि वे कैसे जीना और शासित होना चाहते हैं। जो नियम-कानून उन्होंने बनाए थे वे हमें विवेकपूर्ण लगे। मैंने बच्चों से पूछा, "उन्हें अपने विचार भला कहाँ से मिले होंगे?" बच्चों का जवाब था कि शायद उनके पिछले अनुभवों से उन्होंने यह अन्दाज़ लगाया होगा कि उन्हें यह सब चाहिए। तब हमने मेफ्लावर कॉम्पैक्ट (Mayflower Compact) के तहत बनी वर्जिनिया, मैसाच्युसेट्स, बे कॉलोनी, मेरीलैण्ड, कैरोलाइना, जॉर्जिया व कनैक्टिकट की सरकारों का अध्ययन किया। हमने इन बस्तियों की सरकारों और 1787 के अध्यादेश की तुलना की। हमने पाया कि अध्यादेश एक अच्छा दस्तावेज़ था जिसमें उपरोक्त उपनिवेशों के श्रेष्ठतम बिन्दुओं का समावेश करने के साथ अनेक लोकतांत्रिक उपाय भी शामिल कर लिए गए थे।

हमने मौजूदा सरकार की तुलना भी उस सरकार से की जो अध्यादेश के तहत स्थापित की गई थी। हमने उन चीज़ों की सूची बनाई जो 1787 की प्रारम्भिक सरकारों में नहीं थीं। कैथरीन ने कहा कि संविधान ने हमें पायोनियरों से बेहतर सरकार दी है। मैंने बच्चों से पूछा कि क्या वे जानते हैं कि हमें अपना संविधान कैसे मिला। रैल्फ ने कहा ऐसा इसलिए हुआ होगा क्योंकि उपनिवेशकों को देश के मामलों को चलाने की योजना बनानी पड़ी होगी। मैंने उन्हें बताया कि उपनिवेशकों के पास पहले ही एक योजना थी। क्या वे संघटन के अनुच्छेदों (Articles of Confederation) को भूल रहे हैं? उन्हें इनके विषय में कोई जानकारी नहीं थी, सो हमने इन्हें देखा। हमारी इतिहास की पुस्तक में उन कमियों का उल्लेख था जो संघटन के अनुच्छेदों में मानी जाती हैं। रूथ ने कहा, "यही वजह थी कि सैनिकों को उत्तर-पश्चिम की ओर जाना पड़ा। सरकार इतनी मज़बूत नहीं थी कि वह कर एकत्रित कर सके और इस तरह उसके पास अपने कर्ज़ चुकाने लायक पैसे भी नहीं थे।" मैंने जानना चाहा कि क्या संविधान ने उन

कमियों को पूरा किया है। बच्चों का कहना था कि संविधान ने देश का एक प्रमुख बनाया जिसे कानून लागू करने की शक्ति दी गई। संविधान ने एक कानून बनाने वाली प्रतिनिधि संस्था का गठन किया और मामलों की सुनवाई के लिए अदालतें बनाईं। हमने अपनी राष्ट्रीय सरकार के इन तीन अंगों के दायित्वों को तथा उन्हें नियंत्रित व सन्तुलित करने की व्यवस्था को देखा-जाँचा।

अपने अध्ययन के दौरान बच्चों को पता चला कि प्रारम्भ में संविधान को स्वीकारा ही नहीं गया था क्योंकि उसमें उन अधिकारों का कोई उल्लेख ही न था जिनके लिए उपनिवेशकों ने संघर्ष किया था। अधिकारों का विधेयक (Bill of Rights) बाद में जोड़ा गया था। बच्चों ने इस विधेयक का ध्यान से अध्ययन किया और उसके तहत दिए गए अधिकारों की सूची बनाई। इसके फलस्वरूप उन्होंने राज्य व राष्ट्रीय सरकारों व उनके कामों की तुलना की। हमने एक सूची बनाई जिसमें उन सभी चीज़ों को सूचीबद्ध किया गया जिनके द्वारा राज्य व राष्ट्रीय सरकारें हमारे कस्बे की व्यवस्था से सम्पर्क में आती हैं। हमारे कस्बे की सरकार को समझने के लिए हमने टाउनशिप समिति के प्रमुख व शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष से साक्षात्कार किए। हम काउंटी के न्यायालय भी गए और काउंटी के स्कूलों के अधीक्षक से भेंट की। काउंटी जेल के वॉर्डन बच्चों को जेल के दौरे पर ले गए। हमने काउंटी क्लर्क के कार्यालय को देखा और काउंटी सरकार के बारे में कुछ सीखा। इन प्रयासों से बच्चों को साफ-साफ अन्दाज़ होने लगा है कि सरकार क्या होती है।

प्राथमिक समूह के बच्चे इस दौरान समुदाय का अध्ययन करते रहे हैं। इस काम के लिए हम "न्यू जर्सी की समाज अध्ययन की निर्देशन-पुस्तिका" (*New Jersey Handbook of Social Studies*) की रूपरेखा का उपयोग करते रहे हैं। इसमें स्कूल तथा पर्यावरण के भौतिक पक्षों का अध्ययन भी शामिल है। बच्चों ने अपने मोहल्ले का एक नक्शा बनाया और उसका उपयोग करना सीखा। उन्होंने समुदाय के कामगारों के बारे में पढ़ा और यह जाना कि वे कौन-कौन सी सेवाएँ उपलब्ध करवाते हैं। उन्होंने आवासों का अध्ययन किया और इस अध्ययन को विस्तृत करते हुए उसमें पशुओं व पक्षियों के आवासों को भी जोड़ा। उन्होंने पक्षियों के लिए काठ के घर बनाए तथा उनके दाने-पानी के स्थान बनाए, ताकि सर्दियों भर इस इलाके में आकर रहने वाले पक्षियों को खिला-पिला सकें।

किसी एकल-शिक्षक शाला में छोटे बच्चों के साथ क्या किया जा सकता है, यह मैं धीरे-धीरे सीखने लगी हूँ। बड़े बच्चे तो शिक्षक न हो तब भी किसी उद्देश्य के लिए काम में जुटे रहते हैं, पर छोटे बच्चों को अकेले अधिक समय गुज़ारना इसलिए मुश्किल लगता है क्योंकि उनका ध्यान अधिक समय तक किसी एक विषय पर टिक नहीं पाता। मैं अब छोटे बच्चों के साथ समय बिताने के लिए बड़े बच्चों का ऐसा उपयोग करने लगी हूँ जिससे दोनों को लाभ हो। क्रमशः एक प्रभावी दैनिक कार्यक्रम उभर आया है।

हमारे स्वास्थ्य के पाठों में हमने पदार्थों के खाद्य मूल्य का सघन अध्ययन किया। इन पाठों का बच्चों की खाने-पीने की आदतों पर प्रभाव नज़र आने लगा है। अधिकांश बच्चे अब भरपेट नाश्ता करके ही स्कूल आते हैं और शायद ही कोई खाली पेट आता हो। जब मैं श्रीमती सामेटिस से मिलने गई तो उन्होंने बताया कि उनकी बेटियाँ हरे पत्तों की सब्ज़ियाँ खाने लगी हैं, जो वे पहले छोड़ देती थीं। वे हरे पत्तों की सब्ज़ियों को पौष्टिक व स्वादिष्ट तरीके से पकाने में माँ की मदद भी करती हैं।

दोपहर के गर्म मध्याह्न भोजन का कार्यक्रम एक अर्से से निर्बाध चल रहा है। रसोई में काम करना सब बच्चों को अच्छा लगता है। पाक दल ने इस सप्ताह बड़े भगोने का नामकरण "श्रीमान" किया और छोटे का "श्रीमती"। सारे प्याले उनके एककर्णी बच्चे बन गए हैं। वे हरेक बच्चे को बखुशी अन्दर-बाहर रगड़कर साफ करते हैं। उन्हें अपनी साफ-सुथरी रसोई पर नाज़ है और इस बात पर भी कि दोपहर के सत्र से पहले वे अपना सारा काम खत्म कर लेते हैं। इस सप्ताह रैल्फ को बरतन माँजने थे, पर चूँकि वह अनुपस्थित रहा, फ्रैंक ने स्वेच्छा से बरतन माँजने की ज़िम्मेदारी ली। यह इस बात का प्रमाण है कि रसोई में काम करना भी मज़ेदार लग सकता है।

चित्र-फलक सतत उपयोग में रहते हैं। बच्चों ने बर्फबारी के इतने दृश्य बनाए कि उन्हें टाँगने की जगह ही नहीं है। हमने उन सबको बाकायदा कागज़ों पर चिपकाया और "शीत दृश्य" शीर्षक से एक किताब बना डाली।

इस माह मैंने हर दिन स्कूल का काम समाप्त होने पर रैल्फ और कैथरीन की अँग्रेज़ी व्याकरण में मदद करने का समय निकाला। हाई स्कूल में कुछ चीज़ों की जानकारी ज़रूरी होगी और मैं कोशिश कर रही हूँ कि उनको वह सब ज़रूर

आ जाए। उन्होंने मेरे साथ इच्छा से काम किया है तथा घर पर भी अतिरिक्त काम किया है।

इस सबके बावजूद पिछले माह के काम ने मुझे उतना सन्तोष नहीं दिया जितना दिसम्बर के माह ने दिया था। मिस एवरेट और मैं पिछले सप्ताह साथ काम करते रहे हैं और वे इस स्थिति को जाँचने में मेरी मदद करती रही हैं। क्योंकि बच्चों ने सन्तोषप्रद व्यवहार सीख लिया है और कोई नई समस्याएँ पैदा नहीं हो रही हैं, स्कूल का काम सही ढंग से चल रहा है। पर परेशानी यह है कि हम एक स्तर पर आकर ठहर-से गए हैं। मनोवैज्ञानिक कहेंगे कि हम सीखने की प्रक्रिया के वक्र में एक समतल पठार पर पहुँच गए हैं। मुझे पता है कि उम्दा शिक्षण के बारे में जो कुछ मैं जानती हूँ मैं उस सबका उपयोग नहीं कर पा रही हूँ। मेरे लिए यह सब बड़ा कठिन है। शब्दों को जानना एक बात होती है, पर शब्दों को कर्म में उतारना ज़्यादा मुश्किल है।

मिस एवरेट और मैंने इस बात पर काफी विचार-विमर्श किया कि हम किस प्रकार बच्चों के जीवन को अधिक प्रभावी रूप से दिशा दे सकते हैं। हमें लगता है कि तात्कालिक वातावरण में उनके अनुभवों को समझने में हमें उनकी मदद करनी चाहिए। क्योंकि उन्हें आगे वास्तविक परिस्थितियों का सामना करना है, अतः यह ज़रूरी है कि वे सीख लें कि उन्हें अपने वातावरण से न केवल आवश्यक तालमेल बैठाना होगा बल्कि उसमें वांछनीय बदलाव भी लाने होंगे। इस प्रकार वे जो कुछ भी सीखेंगे उससे वे काउंटी के, राज्य के व दुनिया के व्यापक समुदायों को भी समझ सकेंगे।

समुदाय में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर मैं बच्चों को विविध शैक्षिक अनुभव उपलब्ध करवा सकी हूँ। हमने साथ-साथ अपने आस-पड़ोस की छानबीन की है, इलाके की भौमिकी को, पेड़-पौधों और जीव-जन्तुओं को जाना-समझा है। हमने रेड इण्डियनों की जनश्रुति और उनके आरम्भिक इतिहास की छानबीन की है। अपनी सरकार को स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक ज़्यादा समझने के लिए हमने तमाम कोशिशें की हैं क्योंकि इसका हमारे रोज़मर्रा के जीवन पर असर पड़ता है। मिस एवरेट का सुझाव था कि शायद बच्चों को अब समसामयिक समुदाय के बारे में अधिक जानने की कोशिश करनी चाहिए। शायद समुदाय के विश्लेषण से हमें उसके सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा करने का कोई उपाय मिले।

मिस एवरेट ने निम्नलिखित रूपरेखा बनाई ताकि शुरुआत करने में मुझे मदद मिले। उन्होंने जनगणना के कुछ आँकड़े भी हमें उपलब्ध करवाए।

मंगलवार, 15 फरवरी

हमारे समकालीन समुदाय के अध्ययन की शुरुआत करने के लिए मैंने बोर्ड पर प्रश्न लिखाः "आज का वैली व्यू (Valley View) औपनिवेशिक युग के वैली व्यू से किस तरह भिन्न है?" कई बच्चों के पास हमारे कस्बे के प्रारम्भिक इतिहास पर जो पुस्तिका हमने पिछले साल बनाई थी उसकी प्रतियाँ मौजूद थीं। बच्चों की टिप्पणियों को मैंने बोर्ड पर दर्ज कियाः

"आजकल लोग कम हैं।" (रूथ)

"आज के ज़्यादातर घर आधुनिक हैं।" (मेरी)

"आजकल गाड़ियाँ हैं और यातायात के बेहतर साधन हैं, और खासकर सड़कें पहले से बेहतर हैं। काम करने के वास्ते हमारे पास बेहतर उपकरण हैं।" (वॉरेन)

मैंने वॉरेन ने पूछा कि इसका मतलब क्या है और उसने खुलासा कियाः

"चीज़ें आसानी से मिल जाती हैं क्योंकि वे मशीनों से बनाई जाती हैं और कुछ लोग सबके लिए काम करते हैं।"

"आजकल सरकार को हमारी मदद करनी पड़ती है।" (थॉमस)

"लोग दूसरों की मदद करते हैं, वे सिर्फ अपने लिए चीज़ें नहीं बनाते।" (हेलेन)

"हम अपना दूध दुग्ध केन्द्र पर ले जाते हैं, केवल अपनी ज़रूरत लायक उत्पादन नहीं करते।" (कैथरीन, हेलेन के बिन्दु को विस्तार देते हुए)

मैंने स्पष्ट किया कि जब ऐसा किया जाता है तो इसे विशिष्ट कृषि (specialised farming) कहा जाता है। आरम्भिक दिनों में लोग सामान्य खेती करते थे। हमने अपने इलाके के सामान्य व विशिष्ट खेतों की पहचान कीः

"जहाँ आजकल सिर्फ खेत और जंगल हैं, पहले वहाँ कस्बे थे। लोग यहाँ से चले गए हैं।" (सोफिया)

"पहले यहाँ चमड़े और अनाज पीसने की मिलें हुआ करती थीं और अब वे यहाँ नहीं हैं।" (वॉरेन)

तब मैंने जनगणना के कुछ आँकड़े बोर्ड पर लिखेः

वर्ष	आबादी
1810-1820	3360
1820-1830	1962
1830-1840	1957
1840-1850	727
1850-1860	792
1860-1870	638
1870-1880	538
1880-1890	503
1890-1900	400
1900-1910	405
1930	331

1810 से 1930 के दौरान वैली व्यू की आबादी में ज़ाहिर तौर पर कमी आई है, जबकि इस दौरान काउंटी की आबादी 13,170 से बढ़कर 43,187 हो गई है। सोफिया ने सवाल किया कि ऐसा भला क्यों हुआ होगा। मैंने सवाल समूह की ओर पलट दिया। बच्चों ने जो टिप्पणियाँ कीं उनमें से कुछ ये थींः

"हमने पढ़ा है कि पहले लोग अपनी ज़मीन के बारे में इतने सचेत नहीं होते थे क्योंकि ज़मीन की कोई कमी नहीं थी और जैसे ही उसका उपजाऊपन कम हो जाता था, वे कहीं और चले जाते थे। हो सकता है कि वैली व्यू की ज़मीन कम उपजाऊ हो गई हो और लोग बेहतर ज़मीन की तलाश में चले गए हों।" (मेरी)

"शायद वे पश्चिम की ओर फैल गए हों, जैसे पूर्व में बसे कई लोगों ने भी किया था।" (पश्चिम की ओर पलायन के अपने हालिया अध्ययन पर सोचते हुए एल्बर्ट ने कहा।)

"1840 से 1850 के बीच आबादी में भारी कमी आई। शायद ऐसा गोल्ड रश (Gold Rush) के कारण हुआ हो।" (वॉरेन)

"खेतीबाड़ी से अधिक फायदा नहीं होता था क्योंकि पश्चिम से, जहाँ ज़मीन

उर्वरक और यातायात बेहतर है, चीज़ें सस्ती मिल जाती थीं।" (वैली व्यू पर पुस्तिका को पढ़ते हुए सोफिया ने टिप्पणी की।)

क्योंकि समय हो चुका था, मैंने सुझाया कि इस चर्चा से उभरे कुछ सवाल बोर्ड पर लिख दिए जाएँ ताकि उनके जवाब हम बाद में तलाश सकें:

1. वैली व्यू में लोग इतने कम क्यों हो गए हैं?
2. क्या आगामी वर्षों में उनकी संख्या और घटेगी?
3. जो नौजवान यहाँ पले-बढ़े उनका क्या हुआ?
4. आज कौन से ऐसे काम उपलब्ध हैं जो पहले नहीं थे?
5. कौन से ऐसे काम हैं जो प्रारम्भिक निवासियों को उपलब्ध थे, पर हमें उपलब्ध नहीं हैं?
6. क्या आज हमारे कुछ काम ऐसे भी हैं जो प्रारम्भ में यहाँ आकर बसने वालों के पास भी थे?

मैंने वॉरेन से कहा कि वह सचिव बने और हमारी चर्चा को दर्ज करे। उसे लिखने के अभ्यास की ज़रूरत है।

बुधवार, 16 फरवरी

बच्चों ने कल जो चर्चा हुई थी उसकी समीक्षा की। हमने अपने सवालों को फिर से देखा और यह सोचने की कोशिश करने लगे कि उनके जवाब कैसे मिलेंगे। फ्रैंक ने सुझाया कि चौथे सवाल का जवाब पाने के लिए हमें दो सूचियाँ बनानी होंगी। पहली सूची में आजकल जो काम होते हैं उन्हें दर्ज करना होगा और दूसरी में पहले जो काम होते थे उन्हें लिखना होगा। उसका कहना था कि इससे हम दूसरे सवालों के उत्तर भी ढूँढ सकेंगे। मैंने समूह को सुझाव दिया कि चित्र व ग्राफ आदि हमें चीज़ों को साफ-साफ देखने में मदद करते हैं। वैली व्यू की आबादी के साथ उसका आकार भी घटा है। मेरी, हेलेन, जॉर्ज और एडवर्ड विभिन्न समयों पर वैली व्यू का इलाका दिखाने के लिए नक्शे बना रहे हैं। सोफिया, रूथ, थॉमस और वॉरेन आज के समुदाय के काम-धन्धों की सूची बना रहे हैं। मेरी, एल्बर्ट और डॉरिस वैली व्यू की पुस्तिका को पढ़ रहे हैं ताकि वे प्रारम्भिक बाशिन्दों के काम-धन्धों की सूची बना सकें।

गुरुवार, 24 फरवरी

प्राथमिक समूह के बच्चे उपलब्ध सामुदायिक सेवाओं के अध्ययन में जुटे हुए हैं। आज विलियम ने पूछा कि क्या हम डाकघर बनाने वाले हैं। जब मैं बड़े बच्चों के साथ काम कर रही थी, प्राथमिक समूह के बच्चों ने पुस्तकालय की किताबों से डाकघर की जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश की।

बड़े समूह की समितियों ने अपनी छानबीन की जानकारी दी और उन्होंने जो सूचियाँ बनाई थीं उनके बारे में बताया। रूथ ने अपने समूह की ओर से बोलते हुए बताया कि आज के उद्योगों में हमारे कस्बे का सबसे प्रमुख धन्धा डेयरी का है। मैंने इस सूत्र को आगे बढ़ाना उचित समझा क्योंकि डेयरी उद्योग के सघन अध्ययन में सीखने की बहुत-सी सम्भावनाएँ नज़र आती हैं। इस अध्ययन से हमारे समुदाय के मौजूदा रुझान समझ आ सकते हैं, और वे यह भी जान सकते हैं कि समुदाय जैसा है वैसा क्योंकर बना। मैंने बच्चों से पूछा कि क्या आरम्भिक दिनों में भी ऐसा ही था। रैल्फ ने कहा, "नहीं। पहले हरेक परिवार अपनी ज़रूरत खुद पूरी करता था।" "क्या उनके पास बेचने को कुछ भी नहीं था?" मैंने पूछा। "अरे हाँ," रैल्फ ने जवाब दिया, "उनके पास दूध बच जाता था जिससे वे मक्खन बनाते थे और अपनी अतिरिक्त फसल के साथ बाज़ार में बेचने ले जाते थे।" वॉरेन ने मेरे सवाल के जवाब में जोड़ा कि दूध के बदले मक्खन इसलिए बेचा जाता था क्योंकि जब तक वे शहर पहुँचते, दूध फट जाता। चर्चा के दौरान उन्होंने वे कारण बताए जिनके चलते वैली व्यू में डेयरी उद्योग विकसित हुआ था:

- पथरीली भूमि खेती के लिए कम उपयोगी है, पर चरागाह के लिए अच्छी है।
- पास ही में बड़े बाज़ार भी हैं; न्यू यॉर्क व नेवार्क के लोगों को दूध की ज़रूरत है, पर वे शहरों में गायें नहीं रख सकते हैं।
- बेहतर सड़कों और बेहतर यातायात के कारण शहरों में दूध सही-सलामत पहुँचाया जा सकता है।
- दूध को सही रखने के साधन विकसित कर लिए गए हैं, जिससे दूध का उत्पादन लाभदायक है।

हमारी चर्चा में हमारे लिए कुछ सवाल भी उभरे और मे इन्हें सवालों की सूची में जोड़ देगी। ये सवाल थे:

- वैली व्यू के प्रारम्भिक दिनों में एक विशिष्ट उद्योग के रूप में डेयरी उद्योग इतना महत्वपूर्ण क्यों नहीं था?
- तब से आज डेयरी उद्योग एक विशिष्ट उद्योग कैसे बन चला है?
- आज डेयरी उद्योग कैसे चलाया जाता है?
- डेयरी फार्मों में कौन से आधुनिक तरीके काम में लाए जाते हैं?
- कुछ इलाकों में डेयरी उद्योग अधिक विकसित है। क्या भूमि की सतह और वातावरण का इससे कोई सम्बन्ध है?
- वैली व्यू और न्यू जर्सी के दूसरे भागों में जो दूध उत्पादन होता है उसके बाज़ार कहाँ-कहाँ हैं?
- अच्छी सड़कें कैसे मदद करती हैं?

मंगलवार, 1 मार्च

प्राथमिक समूह ने कस्बे के डाकघर जाने की योजना बनाई। एलिस ने सलाह दी कि वे जाएँ तो अपनी आँखें और कान खुले रखें ताकि ज़्यादा से ज़्यादा जान सकें। जो प्रश्न वे डाकपाल से पूछना चाहते हैं उनकी बच्चों ने एक सूची बनाई। उन्हें पुस्तकालय में डाकघर के बारे में जो कुछ सामग्री मिली है उसे वे पढ़ने लगे हैं। मैंने हरेक बच्चे को पढ़ने के लिए कुछ चुनने में मदद की। डेयरी उद्योग के इलाकों तथा भौतिक परिस्थितियों व बाज़ारों के बीच रिश्ते को जानने के लिए बड़े बच्चों को पहले यह जानना था कि कौन-कौन से इलाकों में डेयरी उद्योग विकसित है और उन इलाकों के कौन-कौन से गुण उन्हें उद्योगों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। बच्चों ने कुछ समूह बना लिए ताकि वे हमारी काउंटी, राज्य और दुनिया के ऐसे इलाकों को नक्शों पर दर्शा सकें जहाँ डेयरी उद्योग पनपा है।

बुधवार, 2 मार्च

आज बड़े बच्चों को नक्शों का काम करते छोड़ शेष सब कस्बे के डाकघर गए। डाकपाल ने बच्चों को पूरा डाकघर दिखाया और उनके सवालों के जवाब दिए। उन्होंने बच्चों को मनीऑर्डर के खाली फॉर्म दिए और चीज़ों को रद्द करने के ठप्पे के नमूने भी। बच्चों ने देखा कि डाक कैसे छाँटी जाती है, कैसे थैलों में बन्द की जाती है और फिर रेलगाड़ी तक पहुँचाई जाती है। बच्चों ने डाक डालने के लिए बने अलग-अलग खाँचों और खिड़कियों को देखा और उनके उद्देश्यों के बारे में पूछताछ की।

लौटने पर बड़े बच्चों ने खुश होते हुए बताया कि उन्होंने ज़िम्मेदार बच्चों का सा आचरण किया और खूब काम किया। "हम पूरे समय व्यस्त रहे, मिस वेबर," उनकी टोली के प्रमुख ने बताया।

गुरुवार, 3 मार्च

आज सुबह नन्हों ने अपना डाकघर बनाने की योजना बनाई। उन्हें इसके लिए वह कोना चाहिए जहाँ चित्र-फलक रखे हैं और वे अपना डाकघर सन्तरे के डिब्बों से बनाना चाहते हैं। एलिस ने समूह का सचिव बन किए जाने वाले सभी कामों की सूची बनाई।

शुक्रवार, 4 मार्च

आज बच्चों ने बेहतरीन क्लब बैठक की। मैं आजकल चर्चा में कम हिस्सा लेती हूँ और बच्चे भी प्रस्ताव रखते समय या टिप्पणी करते समय पलटकर मुझे सम्बोधित नहीं करते। वास्तव में वे शायद यह भी भूल जाते हैं कि मैं वहाँ हूँ। सिलाई क्लब की बैठकें खुशनुमा होती हैं। हर सप्ताह हम सिलाई करते समय बातचीत भी करते हैं, और मैं अन्दर के कुछ राज़ जानने लगी हूँ। मुझे मालूम है कि हर लड़की की अपने परिवार के शेष सदस्यों में से हरेक के प्रति क्या भावनाएँ हैं, उन्हें विशेष तौर पर क्या पसन्द या नापसन्द है, उनके भावी सपने क्या हैं, वे विवाह, तलाक, दोस्ती, प्रेम और बच्चों के लालन-पालन के विषय में क्या सोचती हैं, उन्हें कौन सी किताबें पढ़ना पसन्द हैं, वे पैसों के बारे में क्या सोचती हैं, तथा तमाम अन्य चीज़ें। मुझे उन्हें स्वस्थ यौन शिक्षा उपलब्ध करवाने के कई मौके मिले हैं।

सोमवार, 7 मार्च

जॉर्ज और एडवर्ड डाकघर बनाने में छोटे बच्चों की मदद कर रहे हैं। शेष छोटे बच्चों ने सूची से अपनी पसन्द के काम चुन लिए हैं।

बड़े बच्चों ने अपने नक्शे पूरे कर लिए हैं। उन पर दुनिया भर के ऐसे इलाके दर्शाए गए हैं जहाँ दूध उत्पादन प्रमुख गतिविधि है। अब वे उनका बारीकी से अध्ययन कर रहे हैं ताकि यह समझ सकें कि भूमि, जलवायु, बाज़ारों की संख्या व निकटता, सड़कें, यातायात के साधन आदि का डेयरी उद्योग के साथ क्या रिश्ता है।

मंगलवार, 8 मार्च

आज वैली व्यू के बारे में हमने अब तक जो कुछ सीखा है उसकी समीक्षा की गई। इसके लिए हमने अपनी सूची में दर्ज सभी सवालों के यथा सम्भव जवाब देने की कोशिश की। दूध उत्पादन के आधुनिक तरीकों पर चर्चा के दौरान दो सवाल उठाए गए:

- दूध निकालने की मशीन कैसे काम करती है?
- दूध को पाश्च्यूरीकृत कैसे किया जाता है?

गुरुवार, 10 मार्च

डेयरी फार्मों में कौन से आधुनिक तरीके अपनाए जाते हैं यह जानने के लिए बच्चों ने कस्बे की सबसे बढ़िया डेयरी देखने की योजना बनाई। हम वहाँ क्या-क्या जानना चाहेंगे उसे हमने सूचीबद्ध कर लिया:

- दूध की जाँच कैसे की जाती है?
- दूध निकालने की मशीनें कैसे काम करती हैं?
- दूध को ठण्डा कैसे किया जाता है?
- श्री रेमण्ड को हर दिन कितना दूध मिल पाता है?
- उनके पास कितनी गायें हैं?
- मक्खन कारखाने में भेजने से पहले दूध को कैसे तैयार किया जाता है?
- दूध निकालने में उन्हें कितना समय लगता है?
- दूध बेचने से पहले उन्हें क्या-क्या करना पड़ता है?
- क्या गायों की एक निश्चित संख्या ज़रूरी होती है?
- बढ़िया दूध पाने के लिए वे गायों को क्या खिलाते हैं?
- क्या मक्खन कारखाना किसी खास स्तर का दूध ही स्वीकारता है?
- गाय की टी.बी. की जाँच कैसे होती है?
- अगर गाय इस जाँच में खरी न उतरे तो क्या होता है?
- अधिक दूध पाने के लिए किसान को गाय की कैसी देखभाल करनी चाहिए?
- श्री रेमण्ड का दूध जाँच में कैसा निकला?
- क्या श्री रेमण्ड दूध उत्पादक संघ (Dairymen's League) के सदस्य हैं?
- अगर हैं, तो संघ उनके लिए क्या करता है?

स्कूल के बाद रैल्फ और मैं श्री रेमण्ड के पास साक्षात्कार की तारीख तय करने गए। हमने अपने सवालों की सूची उनके पास छोड़ दी ताकि उन्हें तैयारी का मौका मिल सके।

गुरुवार, 17 मार्च

पिछले तीन दिन से सड़कों पर बिछी बर्फ के कारण कई बच्चे स्कूल नहीं आ पा रहे। मैं हर बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों पर काफी समय लगा सकी। इससे उनकी कई परेशानियाँ दूर हो पाईं। पहले दो दिन तो बच्चों को यह सब बड़ा अच्छा लगा और वे बार-बार कहते रहे, "काश, हमेशा ही ऐसा हो सके।" पर कल उन्हें अपने साथियों की कमी अखरने लगी, सामूहिक चर्चाओं का जोश याद आने लगा। कैथरीन फूट पड़ी, "यह तो संन्यासियों जैसी हालत है, बस अकेले काम करते रहो। मुझे तो संन्यासी बनना पसन्द नहीं है। क्या आपको पसन्द आएगा, मिस वेबर!"

घनघोर बारिश और आँधी-तूफान का मुझ पर बुरा असर पड़ता है और मेरा मिज़ाज बच्चों को प्रभावित करता है। आज हम सब तनाव में थे। मैंने शान्त रहने की खूब कोशिश की पर मैंने पाया कि मैं रूखे, असम्बद्ध वाक्यों में बोल रही हूँ। जब हम गाने लगे तो हमारा आन्तरिक तूफान मानो गुज़र गया। आज रात हम "स्नोव्हाइट और सात बौने" फिल्म देखने गए। बच्चों ने जब तक उसे दो बार न देख लिया, वे लौटने को तैयार ही न हुए। फिल्म की डायन से उन्हें डर तक नहीं लगा। बच्चे नन्हे जानवरों को देख बेहद खुश हुए। हेलेन तो मानो आपा ही खो बैठी। वह बारबार दोहराती रही, "ओह, मुझे ये बहुत प्यारे लग रहे हैं।"

सोमवार, 21 मार्च

बसन्त का पहला दिन खूबसूरत और गर्म था। स्कूल से पहले हम अनौपचारिक रूप से बैठ गए और हमने बसन्त के जो लक्षण हमें नज़र आए हैं उन पर बातचीत की।

दोपहर को खाते वक्त मैंने घोषणा की, "बसन्त आ गया है और आज मैं रॉक गार्डन में काम करूँगी। कौन मेरा साथ देगा?" सोफिया और रूथ ने हामी भरी। बाग में यह देखकर हम चकित थे कि तमाम नन्हे पौधे धरती से झाँक रहे थे।

वर्ना इससे उत्तेजित हो उठी और कूद-कूदकर चीखने लगी, "आओ, आकर देखो तो सही हमारे बाग में क्या-क्या है!" मे, विलियम और मेरी भागे आए। बाद में कैथरीन, एलिस और शेष नन्हे भी आ जुड़े। कुछ ही देर में रैल्फ भी यह देखने आ गया कि क्या वह भी कुछ मदद कर सकता है। दोपहरी का घण्टा पूरा हुआ तो हम सभी को अफसोस हुआ।

नन्हे फिर से अपने खेलघर में खेलने लगे हैं। आज उन्होंने मार्था की मदद से एक कठपुतली नाटक तैयार किया। उन्होंने हाथ से लिखा आमंत्रण पत्र बड़े बच्चों को दिया और उन्हें नाटक देखने अपने "घर" आने का न्यौता दिया। पत्र की वर्तनी सुधारने में मार्था ने उनकी मदद की। एण्ड्रयू, एलेक्स, गस, वर्ना, पर्ल और मे भी घर-घर खेलती हैं। एण्ड्रयू को खेलना पसन्द है पर वह कहता है कि लड़कियाँ कभी-कभार बड़ी दादागीरी छाँटती हैं।

मंगलवार, 22 मार्च

हम सब बसन्त-रोग से ग्रस्त हैं। आज दूसरी काउंटी की छह शिक्षिकाएँ मिलने आई थीं और हममें से किसी की काम करने की इच्छा नहीं थी। हमने खेलने का समय बढ़ा दिया और काम व पढ़ाई का समय घटा दिया, फिर भी राहत न मिली। थोड़ी-थोड़ी देर में कोई न कोई बच्चा चुपचाप उठता और कक्षा के बाहर चक्कर काट आता, ताकि जग जाए और लौटकर काम कर सके। पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ। हमारे मेहमानों के जाने के बाद हमने यह कोशिश त्याग दी और बगीचे का काम करने बाहर निकल आए। बड़े बच्चों ने क्यारी से घासपात हटाई और शेष बच्चों ने रॉक गार्डन की खरपतवार साफ की, और पत्थरों की पगडण्डियों को साफ कर दिया।

बुधवार, 23 मार्च

कल की कमी पूरी करने के लिए आज बच्चों ने बेतहाशा काम किया।

श्री रेमण्ड के साथ साक्षात्कार पूरा हुआ। बच्चों के साथ वे बड़े आराम से मिले। हम उनकी बैठक में बैठे और उन्होंने बच्चों के सवालों के उत्तर दिए। हरेक बच्चे को कुछ प्रश्नों के उत्तर दर्ज करने थे। श्री रेमण्ड हमें गौशाला ले गए और मशीन से दूध निकालने का तरीका दिखाया। उन्होंने बताया कि वे मशीनों की देखभाल कैसे करते हैं, गायों को चारा आदि कैसे खिलाया जाता है, उनकी देखभाल कैसे की जाती है। मार्था, हेलेन और वॉरेन लगातार सवाल दागते रहे।

गुरुवार, 24 मार्च

आज सुबह हमने उस जानकारी की समीक्षा की जो हमें श्री रेमण्ड के यहाँ मिली थी। रैल्फ यह जानना चाहता था कि जब श्री रेमण्ड का दूध मक्खन कारखाने में पहुँचता है तो उसका क्या होता है? हमने मक्खन कारखाने में जाने की योजना बनाई ताकि हमें निम्नोक्त सवालों के उत्तर मिल सकें:

- क्या वे दूध से कुछ बनाते हैं?
- वे दूध को पाश्च्यूरीकृत कैसे करते हैं?
- दूध में वसा की मात्रा की जाँच कैसे होती है?
- दूध बोतल में बन्द कैसे किया जाता है?
- दूध का वज़न कैसे लिया जाता है?

सोमवार, 28 मार्च

बड़े बच्चे अपना काफी समय दुनिया के दूध उत्पादन इलाकों की तलाश में बिताते रहे हैं। आज हम एक सुविधाजनक समूह में अपनी टिप्पणियाँ व नक्शे लेकर बैठ गए। हमने अपने शोध के नतीजों पर बातचीत कर उन्हें सूचीबद्ध किया। वॉरेन ने जो सूची मुझे दी उसमें निम्नोक्त बातें थीं:

1. दूध उत्पादन के अधिकांश इलाके उत्तरी शीतोष्ण भाग में स्थित हैं।
2. दक्षिणी शीतोष्ण भाग में भी कुछ दूध उत्पादन क्षेत्र हैं, पर उनकी संख्या कम है।
3. दुनिया के सूखे प्रदेशों में डेयरी क्षेत्र नहीं हैं, पर इसमें एक अपवाद भी है। दक्षिण अमरीका में, जहाँ बरसात कम होती है और जो काफी गर्म भी है, सिर्फ इतना दूध उत्पादन होता है कि वहाँ की गोरी आबादी को दूध उपलब्ध हो सके।
4. डेयरी क्षेत्र उच्चभूमि व जंगलों वाले इलाकों में स्थित हैं। अक्सर इन स्थानों में खेती करना काफी कठिन होता है, पर धरती इतनी तो उपजाऊ होती है कि पशुओं के लिए कुछ फसलें और चारा पैदा हो सके।
5. दूध उत्पादन निचली सपाट भूमि में भी किया जाता है जहाँ ज़मीन खेती

> के लिए माकूल है। यहाँ लोग खेतीबाड़ी के बनिस्बत दूध उत्पादन का काम इसलिए पसन्द करते हैं क्योंकिः (क) ये छोटे देश हैं और अनाज पैदा कर फायदेमन्द खेतीबाड़ी के लिए ज़्यादा ज़मीन की ज़रूरत होती है। अपने पशुओं के लिए सिर्फ चारा उगाना अधिक आसान पड़ता है। (ख) अनाज वे उन देशों से ले लेते हैं जहाँ उसे उगाना सस्ता पड़ता है।

बच्चों ने अमरीका में गेहूँ और मक्का उगाने वाले क्षेत्रों की भी तुलना की ताकि उपरोक्त कथनों को दर्शाया जा सके। इस चर्चा से एक अन्य सवाल भी उठाः अगर हमारे भोजन में दूध इतना महत्वपूर्ण है, तो फिर उन देशों के लोग क्या करते होंगे जहाँ दूध उत्पादन नहीं होता?

मंगलवार, 29 मार्च

बड़े बच्चे उस सवाल का जवाब तलाशने लगे हैं जो उन्होंने कल उठाया था। दोपहर के घण्टे में बच्चे कंचों की प्रतियोगिता में व्यस्त हो गए जो उन्होंने खुद आयोजित की थी। हेलेन और रैल्फ ने जोड़ियाँ बनाईं। जो जीते, उनकी फिर से जोड़ियाँ बनाई गईं। यह क्रम तब तक चलेगा जब तक सिर्फ एक जोड़ी बच जाएगी और विजेता तय हो जाएगा। जैसे-जैसे बच्चे प्रतियोगिता से बाहर होते गए उन्होंने अपने लिए खेल आयोजित कर लिए। कभी-कभी मुझे लगता है कि इन बच्चों को किसी शिक्षक की दरकार नहीं है, वे स्वयं ही इतने ढेर सारे काम कर लेते हैं!

बुधवार, 30 मार्च

नन्हों ने अन्ततः अपना डाकघर बना डाला है। आज उन्होंने चिट्ठी की रूपरेखा सीखी और एक-दूसरे को अपना पहला खत लिखा। उन्होंने एक बच्चे को डाकपाल चुना जो टिकटें बेचे, टिकटों को रद्द करने के ठप्पे लगाए और डाक डिब्बों से एकत्रित चिट्ठियों को बाँटे। बड़े बच्चे सामूहिक चर्चा में पिछली बार उठे सवाल – "जिन देशों में दूध उत्पादन नहीं होता वहाँ लोग दूध के लिए क्या करते हैं?" – पर अपनी-अपनी टिप्पणियाँ लेकर आए। हमने अरब देशों के ऊँट, भारत के याक, लैपलैण्ड के रेन्डियर, इटली की बकरियों और इन स्थानों में बसे लोगों की जीवन शैलियों के बारे में बात की। बच्चों ने पाया कि इन देशों की भूमि की विशेषताएँ, वहाँ की जलवायु, वहाँ कितनी फसल उगती है, देश

की समृद्धि (जिन पशुओं को श्रम के लिए काम में लिया जाता है, उन्हीं से दूध लेने की मजबूरी), ये सब चीज़ें निर्धारित करती हैं कि वहाँ कौन से पशु पाले जाते हैं।

हमें पता चला कि हम आज मक्खन कारखाने नहीं जा सकते क्योंकि वह मरम्मत के लिए बन्द है। सो हमने वहाँ पूछे जाने वाले अपने सवाल वॉकर गॉर्डन फार्म पर कल पूछे जाने वाले सवालों की सूची में जोड़ दिए।

गुरुवार, 31 मार्च

प्लेन्सबरो में हमारा गाइड हमें दूध को बोतलबन्द करने वाला संयंत्र, गौशालाएँ, दूध सुखाने वाला संयंत्र इत्यादि दिखाने ले गया। हमने दोपहर का भोजन यहीं किया और हरेक बच्चे को पाव-भर दूध दिया गया। हमारे गाइड ने बताया कि जब उनके कुछ अमरीकी खरीददार यूरोप यात्रा पर जाते हैं तो उन्हें इस दूध की याद इतना सताती है कि वे वॉकर गॉर्डन कम्पनी से दूध मँगवाते हैं। बच्चों ने फौरन यह जानना चाहा कि यह कैसे सम्भव होता है। उन्हें साथ ले जाने के लिए छपी सामग्री दी गई। मार्था ने कहा कि वह इस सबको पढ़कर अपनी दादी को सुनाएगी। अगर इस यात्रा से मार्था और उसकी दादी के बीच बेहतर सम्बन्ध बन पाते हैं, तो भी यह यात्रा फलदायी सिद्ध होगी।

सोमवार, 4 अप्रैल

आज सुबह बच्चों ने जो कुछ वॉकर गॉर्डन डेयरी में देखा था उस पर बातचीत की। हमने पहले तो यह दोहराया कि वहाँ जाने का हमारा उद्देश्य क्या था। तब हमने उन कारणों की सूची बनाई जिससे यह सिद्ध हो सके कि यह डेयरी दुनिया की सबसे बेहतरीन डेयरी क्यों मानी जाती है:

- हर चरण में पूरी सफाई बरती जाती है।
- उनके दुधारू पशु बढ़िया हैं जो सही चारा-पोषण व देखभाल के कारण अच्छा दूध देते हैं।
- वहाँ के कामगारों के बीच उम्दा सहकार है जिसके चलते सब काम सुचारू रूप से सम्पन्न होते हैं।

फ्रैंक इस तथ्य से प्रभावित था कि वहाँ गायों को उनका आहार तोलकर, विटामिन व अन्य पोषक तत्वों के साथ मिलाकर दिया जाता है। उसका कहना

था कि जिस तरह से अपनी देखभाल करते हैं, वहाँ पशुओं की उससे भी बढ़िया देखभाल की जाती है।

मुझे वॉरेन को यह कहते सुन अच्छा लगा कि श्री रेमण्ड भी वे सभी काम करते हैं जो वॉकर गॉर्डन डेयरी में किए जाते हैं, सिर्फ उनका स्तर छोटा है।

मंगलवार, 5 अप्रैल

हमने अब तक डेयरी उद्योग के बारे में जो कुछ भी जाना-सीखा था उसकी समीक्षा की। बच्चों को यह बात समझ आने लगी है कि हमारा इलाका डेयरी उद्योग के लिए सही है। मैंने उनसे पूछा कि क्या उनकी राय में हमें अपनी आय में इज़ाफा करने के लिए अधिक दूध उत्पादन करना चाहिए? इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर हम नहीं दे पाए। मैंने सुझाया कि शायद हमें काउंटी के कृषि एजेंट श्री राब को कहना चाहिए कि वे हमारी मदद करें। समूह के सचिव के रूप में काम कर रही रूथ उन्हें एक पत्र लिखेगी और उन्हें स्कूल आने को आमंत्रित करेगी।

सोमवार, 11 अप्रैल

हमने श्री राब के आगमन की तैयारी शुरू कर दी है। जिन सवालों पर हम उनसे बातचीत करना चाहते हैं उसकी सूची भी बना ली है। ये सवाल हैं:

- हमारे इलाके में कौन-कौन सी डेयरियाँ हैं? क्या वे सहकारी समितियों की हैं?
- पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से क्या वैली व्यू में अधिक डेयरियाँ बनाना उचित होगा?
- अगर वैली व्यू में अधिक डेयरियाँ हों तो क्या सारे दूध की खपत यहीं हो जाएगी, या वह बचेगा?
- क्या दूध उत्पादन संघ का सदस्य बनना अच्छा होता है?
- निजी मक्खन कारखानों और दूध उत्पादन संघ के कारखानों में क्या फर्क होता है?
- दूध की कीमत कैसे तय होती है?
- राज्य दूध नियंत्रण बोर्ड क्या है और वह क्या करता है?

मैंने बच्चों को सुझाव दिया कि अगर हम दूध विपणन के बारे में कुछ पढ़-समझ लें तो शायद श्री राब की बात ज़्यादा समझ आए।

इस सप्ताह मान नामक एक नया जर्मन परिवार हमारे इलाके में आ बसा है। हेनरी आज स्कूल आया। वह अच्छा लड़का लगता है और समूह ने उसे दिल से स्वीकार लिया है। वॉरेन और हेनरी में गहरी दोस्ती हो गई। मैंने हेनरी के साथ कुछ काम किया और पाया कि वह हमारे प्राथमिक समूह के बड़े बच्चों के साथ काम कर सकेगा।

मंगलवार, 12 अप्रैल

आज हमारी चर्चा अतिरिक्त दूध से शुरू हुई। हमें पता चला कि न्यू यॉर्क दूध पट्टी, जिसमें हमारा इलाका आता है, दुनिया का सबसे बड़ा बाज़ार है। यहाँ अतिरिक्त दूध की मात्रा सबसे कम है। पर इसके बावजूद हम अधिक दूध पैदा नहीं कर पाते क्योंकि यहाँ श्रम बेहद महँगा है। औद्योगिक श्रम से स्पर्धा करने के लिए चारा खरीदना पड़ता है क्योंकि ज़मीन की कमी है, और स्वास्थ्य बोर्ड के कठोर नियमों के कारण डेयरी व पशुओं के रख-रखाव पर खर्च भी अधिक होता है। समूह के तीन बच्चों ने अपने माता-पिता का उदाहरण देते हुए बताया कि वे मज़दूर रख ही नहीं सकते क्योंकि मज़दूरी दरें उनकी पहुँच से बाहर हैं। उन्हें कुछ चारा भी खरीदना पड़ता है। और कई इन्तज़ाम भी उन्हें करने पड़ते हैं, जैसे बिजली से दूध ठण्डा करने वाली मशीनें। इन सब कारणों से उनकी कुल आय बहुत कम रह जाती है।

एक अखबार में छपा था कि किसानों के पास अतिरिक्त दूध इसलिए बच जाता है क्योंकि वे मौसमी उत्पादन को बाज़ार की ज़रूरतों के हिसाब से नियंत्रित नहीं करते। अगर किसान परस्पर सहकार करें तो उत्पादन नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे सबको लाभ हो सकता है। एडवर्ड ने कहा कि यह बात सच है: कि उसके पिता को अपने अतिरिक्त दूध की आधी कीमत ही मिल पाती है। उसके पिता के पास जून के महीने में अधिक अतिरिक्त दूध होता है क्योंकि लगभग उसी समय गायों के बछड़े पैदा होते हैं। साथ ही, गायें जून में चरागाहों में चरने जाती हैं और बेहतर चारे के कारण अधिक दूध देती हैं। मैंने पूछा कि वॉकर गॉर्डन डेयरी इस बारे में क्या करती है? बच्चों का कहना था कि वे पूरे साल भर गायों को एक-सा चारा देते हैं और पुरानी गायों को हटा नई रखने

की व्यवस्था करते हैं ताकि दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों हमेशा समान बनी रहें। श्री रेमण्ड भी ठीक यही करते हैं।

सामेटिस बच्चों का कहना था कि उनकी समझ में नहीं आता कि अतिरिक्त दूध होता ही क्यों है। लोग कम कीमत पर अधिक दूध बेच क्यों नहीं देते? पिछली सर्दियाँ उन्होंने शहर में बिताई थीं, जहाँ उन्हें पीने को दूध ही नहीं मिल पाया था क्योंकि वहाँ दूध खरीदना भारी पड़ता था। उनके लौटने के कारणों में एक यह भी था, क्योंकि यहाँ वे एक गाय रख पाते हैं।

बुधवार, 13 अप्रैल

अतिरिक्त उत्पादन की चर्चा आज भी जारी रही। एडवर्ड ने बताया कि मक्खन कारखाने में उस सारे के सारे दूध को अतिरिक्त माना जाता है जो अपने तरल रूप में बेचा नहीं जा सकता हो। हमने कुछ देर यह बातचीत की कि अतिरिक्त दूध का क्या किया जाता है, कैसे मक्खन, पनीर व दूध के अन्य उत्पाद बनाए जाते हैं। हम एक रोचक चर्चा की दिशा में बढ़ गए जब मार्था ने पढ़कर सुनाया कि मक्खन में लैक्टिक एसिड बनाने वाले जीवाणु मिलाए जाते हैं ताकि उसमें खमीर "उठे"। बच्चों को यह तो पता था कि लैक्टिक एसिड का क्या मतलब है और कि जीवाणुओं को पैदा करना होता है, पर यह किया कैसे जाता है यह कोई नहीं जानता था। सोफिया ने कहा कि शायद वे पुराना मक्खन ताज़े में डाल देते होंगे। उसकी माँ जब पनीर बनाती हैं तो दूध में पुराने पनीर का टुकड़ा डालती हैं ताकि दही बनना शुरू किया जा सके। मेरी और एडवर्ड ने बताया कि उनकी माँ नई डबलरोटी बनाते समय खमीर उठाने के लिए पिछली बार के आटे में से बचाकर रखे गए खमीरी आटे को मिलाती हैं।

कल बच्चों को अपनी पुस्तकों में पनीर के इतिहास के बारे में कुछ रोचक जानकारी मिली, जैसे वे कितने प्रकार का होता है, उसे कैसे बनाया जाता है, आदि। वॉरेन हम सबको चखाने के लिए थोड़ा-सा ईडाम नामक पनीर लेकर आएगा।

गुरुवार, 14 अप्रैल

आज सुबह-सुबह दावत हो गई। सबको ईडाम पनीर की छोटी-छोटी लाल गोलियाँ मिलीं, जो समूह को बड़ी अच्छी लगीं।

कल सवाल यह उठा था कि "औपनिवेशिक दिनों में लोग अपने अतिरिक्त दूध का क्या करते थे?" प्रश्न के जवाब में हमने प्रथम दूध रेलगाड़ी, रेफ्रिजरेशन के प्रारम्भिक तरीकों, आधुनिक यातायात व्यवस्था और दूध ठण्डा करने की आधुनिक व्यवस्था के विषय में जानकारी ली। डेयरी उद्योग के लिए रेलगाड़ी का आना महत्वपूर्ण रहा है।

बुधवार, 20 अप्रैल

स्कूल शुरू होता उससे पहले सोफिया और कैथरीन खुशी से लबरेज़ होकर मेरे पास आईं। क्यारी में बेहद सुन्दर फूल खिल आए हैं। वे दोनों रूथ के साथ छुट्टियों में जंगली फूलों वाला रॉक गार्डन देखने गई थीं और उन्होंने चौदह जंगली पौधों की सूची बनाई थी जो उसमें उगे हुए हैं। लड़के एक लम्बी रस्सी ले आए और जी भरकर कूदे। "साथ-साथ कूदें हम लड़के," वे गा रहे थे। मैंने फ्रैंक और डॉरिस से बात की ताकि उन्हें यह पता रहे कि नन्हों की मदद के लिए उन्हें आज क्या-क्या करना है।

नौ बजे डॉरिस और मैं छोटे से खेलघर में पाँच-छह वर्षीय बच्चों के साथ गए। हमने योजना बनाई कि खेलघर के सामने कहाँ अहाता बनेगा, कितना बड़ा बनेगा। हम यह कर ही रहे थे कि एरिक बोला, "मिस वेबर, मेरे पिता आज बगीचा गोड़ रहे हैं।" आइरीन फौरन बोली, "ओह, क्या हम भी बाग लगा सकते हैं? चीज़ों को उगते देखने में बड़ा मज़ा आएगा।" फ्लोरेंस ने बताया कि उसकी माँ रॉक गार्डन बना रही हैं। रिचर्ड ने जोड़ा कि ऐसा करना मुश्किल नहीं होगा क्योंकि खेलघर के पिछवाड़े में पत्थरों का ढेर पड़ा है। मैंने जानना चाहा कि वे पहले क्या करना चाहेंगे। उन्होंने योजना यह बनाई कि वे पहले बिखरी टहनियों, कागज़ आदि की सफाई करेंगे, तब बड़े पत्थरों से अहाता बनाएँगे और फिर सपाट पत्थर ठीक दरवाज़े तक बिछाकर रास्ता बना लेंगे। इसके बाद मैं डॉरिस की देखभाल में उन्हें छोड़ आई। पर मैंने उसे चेता भी दिया कि वह नन्हों को बड़े पत्थर न उठाने दे और उन्हें उनकी ही योजना के अनुसार काम करने दे।

प्राथमिक समूह के शेष बच्चों ने पहले दस मिनटों में वॉल्टर और जॉयस को खत लिखे जो यहाँ से चले गए हैं और जिन्होंने पत्र से हमें अपनी नई शाला के बारे में बताया था। जब मैं अहाते से लौटी तो मैंने खत लिखने में बच्चों की मदद की। दस बजे तक सभी पत्र लिख डाले गए, पर सब बच्चे उन्हें साफ अक्षरों

में उतार नहीं सके। कई खत रोचक थे और काफी लम्बे थे।

दस बजे हम खेल के लिए तैयार थे। बड़े बच्चों ने लकड़ियों व पत्थर का खेल खेला और मैंने छोटों के साथ "मैं टॉमी टिडलर की ज़मीन पर हूँ" खेला। पर वे तब तक खेलने को राज़ी न हुए जब तक मैंने सुबह के उनके काम को ठीक से जाँच नहीं लिया। खेलघर के सामने तरतीब से पत्थर लगा आयताकार अहाता बन चुका था। वहाँ से टहनियाँ, पत्ते, कागज़ साफ किए जा चुके थे। मेहनत-मशक्कत के बाद वे हाथ-मुँह धोने, अपनी कारगुज़ारी को देखने और सुस्ताने के लिए दस मिनट रुके। डॉरिस बोली, "उन्हें लगता है कि यह बड़ा अच्छा लग रहा है।"

खेल घण्टे के बाद समूची शाला पढ़ने में जुट गई। पाँच और छह साल के बच्चों ने मेरे साथ बैठ किताबें देखीं और उन पर बातचीत की।

जिस समय मैं प्रथम समूह के साथ थी, द्वितीय समूह ने बड़ी सावधानी से तैयारी की और अपनी कहानियाँ सुन्दर तरीके से पढ़कर सुनाईं। पढ़ने के बाद उन्होंने अपनी कार्य-पुस्तिकाओं में कुछ अनुवर्तन का काम किया और तब फ्रैंक उन्हें बाहर ले गया ताकि वे खिड़कियों वाले डिब्बे बना सकें। एण्ड्रयू और गस को आरी चलाने और कीलें ठोकने का कुछ अनुभव था। वर्ना ने फट्टों की नाप-जोख की। इन तीस मिनटों के दौरान पाँच और छह साल के बच्चे अपने खेलघर में खेलते रहे।

ग्यारह बजकर दस मिनट पर वर्ना और गस हमारे साथ *रॉबिनहुड* के अभ्यास में जुड़े। एण्ड्रयू एल्बर्ट, एलिस और मेरी के साथ *विनी द पूह* का अभ्यास करने लगा। प्राथमिक समूह की प्रस्तुति में यही नाटक होगा। 12 मई को कठपुतली प्रदर्शन से पूर्व हम हर दिन आधा घण्टा अभ्यास करना चाहते हैं। यह समय हम अपनी पठन कक्षा से निकाल रहे हैं। इसका मतलब होगा कि मैं तीसरे, चौथे, पाँचवें और छठे समूह से सप्ताह में दो बार के बदले एक ही बार मिलूँगी। दूसरी बार वे खुद बैठेंगे और मन ही मन पढ़ेंगे। इस प्रयास से वे कितना समझ पाते हैं, यह बाद में जाँच लिया जाएगा। हमने जो कार्यक्रम तय किया है वह यह है:

सोमवार: तीसरा समूह मेरे साथ बैठेगा; चौथा आपस में मिलेगा; पाँचवाँ और छठा समूह मन ही मन मौन वाचन करेंगे जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

मंगलवारः पाँचवाँ समूह मेरे साथ बैठेगा; छठा आपस में मिलेगा; तीसरा और चौथा समूह मौन वाचन करेंगे जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

बुधवारः चौथा समूह मेरे साथ बैठेगा; तीसरा आपस में मिलेगा; पाँचवाँ और छठा समूह मौन वाचन करेंगे जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

गुरुवारः छठा समूह मेरे साथ बैठेगा; पाँचवाँ आपस में मिलेगा; तीसरा और चौथा मौन वाचन करेंगे जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

साढ़े ग्यारह बजे प्राथमिक समूह के बच्चों ने पुस्तकालय से आसान किताबें चुनीं और वॉरेन के साथ बाहर चले गए। उन्होंने पहले मन ही मन किताबें पढ़ीं और जब उनकी तैयारी हो गई तो एक-दूसरे को पढ़कर सुनाईं।

विश्राम के पीरियड के बाद छोटे बच्चों ने ताल का अभ्यास किया। वे दरियों पर बैठे और मैंने गेंद उछालने की धुन बजाई। उन्होंने पहले ताल की पहचान की और तब बारी-बारी संगीत के ताल के अनुसार गेंद उछाली। बाद में ताल के अनुसार विभिन्न जानवरों की चाल की भी पहचान की। इस दौरान बड़े बच्चे अपने विविध काम करते रहे। वॉरेन और रैल्फ ने कठपुतली मंच के लिए दृश्यों की चर्चा की और उन्हें बनाने की योजना बनाई। रूथ ने ताज़ा घटनाक्रम वाली किताब में जोड़ने के लिए एक लेख लिखा जो दुनिया के नक्शे के साथ छापा जाएगा। हेलेन, मार्था और एल्बर्ट ने कठपुतलियों की डोरें लगाईं। कैथरीन ने उल्लू की पुतली बनाने के लिए उसके चेहरे की कढ़ाई की। साल भर की ज़िम्मेदारियाँ आवंटित करने वाली समिति ने बैठक की। ये सब काम बच्चों ने तब-तब किए जब-जब वे अपने नियमित काम से फारिग हो चुके होते थे।

दोपहर डेढ़ से दो बजे तक पाँच व छह साल वाले नन्हे अपने खेलघर में खेले। आइरीन कुछ शब्दों की वर्तनी का अभ्यास करने के बाद उनमें शामिल हो गई। आइरीन की दिली इच्छा है कि वह लिख सके। शेष प्राथमिक समूह को मैंने कुछ नए शब्द लिखवाए। उन्होंने सूची को ध्यान से देखा ताकि पता चले कि किन शब्दों को उन्हें याद करना होगा। जो थोड़ा-सा समय बचा उसमें मैंने उन्हें गणित में व्यक्तिगत मदद दी।

दो बजे प्राथमिक समूह घर चला गया और मैंने बड़े बच्चों के साथ बेसबॉल खेला। खेल के बाद बड़े समूहों की गणित में मदद की।

4-एच वानिकी क्लब की मार्गदर्शिका में एक अध्ययन का वर्णन है जिसमें तकरीबन एक-चौथाई एकड़ भूमि के टुकड़े का अध्ययन किया जाता है। बच्चे उस भूमि को बारीकी से जाँचते-परखते हैं ताकि वहाँ के पेड़-पौधों, जानवरों व जलचरों, सभी के बारे में जान सकें। हमें भी जंगल में एक ऐसा टुकड़ा मिला जिसमें "सब कुछ" था। पर बरसात शुरू हो जाने के कारण हम ठीक से उसकी छानबीन न कर सके। पर एक पुरस्कार हमें ज़रूर मिला। हमें दोहरा इन्द्रधनुष नज़र आया जो हमने पहले कभी नहीं देखा था। बच्चों ने पूछा कि इन्द्रधनुष कैसे बनता है। वॉरेन को इसका पता था, सो उसने समूह को बताया। पर हममें से कोई यह नहीं जानता था कि दो इन्द्रधनुष क्योंकर बने और मैंने सुझाया कि अवसर मिलने पर हम उत्तर की तलाश करें।

बारिश थमने का इन्तज़ार करते हुए हमने यह चर्चा की कि जंगल के उस हिस्से का अध्ययन हम कैसे करेंगे। कैथरीन ने कहा कि पहले हमें वहाँ वह सब देख लेना चाहिए जिसे हम पहचानते हैं। वॉरेन को लगा कि हमें उस भूखण्ड का नक्शा बनाकर जो चीज़ें मिलें उन्हें चिह्नित करना चाहिए। मैंने जानना चाहा कि "जो चीज़ें मिलें" से उसका क्या अर्थ है। उसने सुझाया कि अगर ऐसे सुराख मिलें जिसमें जानवर हों, या पेड़ों पर, दलदल में, खेतों में या जंगल में सुराख मिलें, तो उन सबको नक्शे पर दर्शाया जाए। मैंने पूछा कि क्या हम पशु भी दर्शा सकते हैं। उत्तर "नहीं" था, "नक्शा इतना बड़ा थोड़े ही होगा।" रैल्फ ने कहा, "बड़ा नक्शा भी तो बनाया जा सकता है।" एल्बर्ट का कहना था कि हमें बड़े नक्शे को इधर-उधर ले जाना मुश्किल होगा। रैल्फ ने जोड़ा कि हमारे पास अपने-अपने छोटे नक्शे होने चाहिए जिन्हें हम बाहर ले जा सकते हैं और एक बड़ा नक्शा होना चाहिए जिस पर हम स्कूल में काम करें।

गुरुवार, 21 अप्रैल

रैल्फ "जून बेरी" के फूलों का एक खूबसूरत गुलदस्ता लेकर स्कूल आया। उसने सोफिया से कहा कि वह उन फूलों को सजा दे और वह उसके लिए गुलदान भी लेकर आया। हम सब बाहर बाग में यह देखने निकल आए कि नया क्या है। जंगली जर्मेनियम, दलदली गेंदा और लेडी स्लिपर सिर उठाए खड़े हैं। मैंने कुछ समय मे के साथ योजना बनाते हुए बिताया जिसे आज नन्हे बच्चों के साथ काम करना है।

प्राथमिक समूह के बच्चों ने फ्रैंक के साथ खिड़की-बक्सों पर काम किया। वर्ना और एलिस ने एक बक्सा रँगा। विलियम, एण्ड्रयू और हेनरी ने काटा, पीटा, नापा-जोखा और एक और बक्सा बना डाला। फ्रैंक नन्हे बच्चों के साथ बड़े सलीके से काम करता है। उनके लिए वे काम वह कभी नहीं करता जिन्हें करना वे खुद सीख सकते हैं।

बड़े बच्चों ने अपने अखबार पर बातचीत की। बच्चों का मानना था कि उनका पहला अखबार दूसरे वाले से बेहतर था क्योंकि उसके लिए अपने लेख हमने काफी पहले से लिखने शुरू कर दिए थे, हमारे पास कई रोचक चीज़ें थीं जिन पर हम लिखना चाहते थे, और सबने सहयोग किया था और योगदान दिया था। उनका सुझाव था कि हमें अपने तीसरे अखबार का काम फौरन शुरू कर दिया जाना चाहिए। मेरी ने कहा कि यह बात हर दिन याद दिलाई जानी चाहिए। वॉरेन को लगा कि अगर सूचना-पट्ट पर सबके नामों की सूची लगा दी जाए तो बेहतर होगा। जैसे-जैसे हम अपना योगदान करें, वह नाम के आगे दर्ज होता चले। मेरी का कहना था कि अगर हमारे पास ढेरों लेख तैयार हो जाते हैं तो हम उनमें से सबसे बढ़िया लेख चुन सकते हैं और एक अच्छा अखबार बना सकते हैं। मे हमारे लिए सूची बना देगी।

अखबार में लिखने के लिए हमने स्कूल की रोचक घटनाओं की सूची बनाई। जब सूची बन चुकी तो रूथ ने कहा, "हमें अच्छी पुस्तक समीक्षा लिखना सीखना चाहिए।" "हाँ, और लेख भी," वॉरेन ने हँसते हुए जोड़ा। "यह हम कल करेंगे," मेरी ने कहा।

स्कूल के बाद सोलह उत्साही बच्चे भू-अध्ययन के लिए रुके। कल की तुलना में आज संख्या अधिक थी। एल्बर्ट ने नवागन्तुकों को संक्षेप में हमारी योजना बताई। हमने अपनी तख्तियाँ और पेंसिलें उठाईं और रैल्फ की अगुवाई में जंगल की ओर बढ़ चले। वहाँ पहुँचते ही चयनित भूखण्ड को हमने घेर दिया। भूखण्ड का नक्शा बनाते समय बच्चे बतिया रहे थे। "मिस वेबर, क्या हमारे अपने-अपने भूखण्ड भी हो सकते हैं?" सवाल रैल्फ का था। "शायद मेरे पिता इन गर्मियों में हमें पैदल यात्रा पर ले जाएँ। वे प्रकृति के बारे में बहुत कुछ जानते हैं," वॉरेन विचार करने लगा। तब रैल्फ ने कहा कि "शायद मेरे पिता भी ले जाएँ। मैं उनसे पूछूँगा!" यह सुन मेरी तो लगभग साँस ही बन्द हो गई।

शुक्रवार, 22 अप्रैल

बड़े बच्चों ने अच्छे आलेख के कुछ मानक तय किए। रूथ, जो हमारी सचिव है, उनकी एक सूची तैयार कर रही है ताकि वह सूचना-पट्ट पर लगाई जा सके। उसे सुविधा से सब अपनी प्रगति पुस्तिका में उतार लेंगे। बच्चों ने पीरियड का बचा हुआ समय आज बनाए गए मानकों के आधार पर कल लिखे गए आलेखों को जाँचने में लगाया।

पठन के पीरियड के बाद छोटे बच्चों ने स्वेच्छा से खेलघर में अपनी क्लब बैठक की। एलिस ने उनकी मदद की और खुद उनके द्वारा बनाए गए नियमों की निम्नोक्त सूची मुझे थमाईः

1. सीढ़ियाँ पूरी करो।
2. खिलौने मत तोड़ो।
3. सीढ़ियों के लिए लगाए गए पत्थर हमें उखाड़ने नहीं हैं।
4. हमें क्यारी नहीं तोड़नी है।
5. गन्दे शब्द नहीं बोलने हैं।
6. अन्दर घुसने से पहले जूते साफ करो।

मंगलवार, 26 अप्रैल

मैं नन्हों के साथ बाहर चली आई तथा फ्लोरेंस ने उन्हें जिंजरब्रेड मानव (Gingerbread Man) की कहानी सुनाई। आज उसे नाटक में बदलने में मज़ा आया क्योंकि हमारे पास भाग-दौड़ के लिए पूरा मैदान था। मुझे आश्चर्य हुआ कि आइरीन ने कहा कि वह गाय बनेगी। उसे हमेशा मुख्य पात्र ही बनने की इच्छा रहती है। इस दौरान बड़े बच्चे अखबार के लिए अपने आलेखों पर काम करते रहे। जब मैं अन्दर आई तो डॉरिस ने अपना लेख थमाते हुए कहा, "मिस वेबर, मैंने नियमों के हिसाब से लिखा है और लगता है कि यह ठीक ही है।" लेख में एक भी अशुद्धि नहीं थी! वैसे भी वह बढ़िया था।

बुधवार, 27 अप्रैल

फ्रैंक ने प्राथमिक समूह के साथ खिड़की-बक्से बनाने का काम किया। वह अपनी ज़िम्मेदारी गम्भीरता से लेता है और मुझे प्रगति की सूचना भी देता है।

आज उसने टिप्पणी की, "मिस वेबर, कभी-कभार जब वे एक-दूसरे के काम में बाधक बनते हैं तो ज़ोर से चीखते-चिल्लाते हैं। मैंने उनसे कहा कि यह बात ठीक नहीं है। विलियम आज काफी देर रूठा रहा, क्योंकि वर्ना ने उसे धक्का लगाया था। मैंने वर्ना से माफी माँगने को कहा और तब उन्हें हाथ मिला दोस्ती करनी पड़ी। अब सब ठीक है।"

गुरुवार, 28 अप्रैल

आज नन्हे बच्चे अन्दर आकर दिन की योजना बनाने में मदद नहीं करना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि वे अपने बाग का काम फौरन शुरू कर दें। हमने उन्हें जाने दिया और एडवर्ड ने खोदने, गुड़ाई करने और जलकुम्भी के बीज बोने में उनकी मदद की।

हमारे सवालों के उत्तर देने श्री राब आए। उन्होंने बच्चों को वैली व्यू में दूध उद्योग के बारे में बताया और काउंटी में दूसरे इलाकों से यहाँ की स्थिति की तुलना की। उन्होंने सहकारी समितियों और उनके महत्व को समझने में उनकी मदद की। उन्होंने न्यू जर्सी स्थित दूध नियंत्रण बोर्ड के काम के बारे में बताया, और यह भी कि दूध की कीमत कैसे तय होती है। बच्चों को पता चला कि अगर खेती के लिए जुताई कम की जाए और घास बनी रहने दी जाए तो वैली व्यू में दूध उत्पादन ज़्यादा वांछनीय बन सकता है। ऐसा करने पर भूमि खराब नहीं होगी, बल्कि बेहतर बनेगी। पर अगर गायों की संख्या बढ़ानी हो और उसके लिए मक्का उगाने के लिए ज़्यादा ज़मीन को जोतकर खेती लायक बनाना हो तो इससे भूमि को नुकसान होगा।

जहाँ तक अतिरिक्त दूध का सवाल है, न्यू जर्सी में दूध का उत्पादन पर्याप्त नहीं है। श्री राब ने बताया कि दूध की कुल खपत का मात्र चालीस प्रतिशत ही काउंटी में होता है। पर उसे शेष दूध उत्पादक इलाकों के साथ होड़ भी करनी पड़ती है। इन इलाकों में पैनसिल्वेनिया के कुछ भाग और न्यू यॉर्क भी शामिल हैं। उनका कहना था डेयरी फार्म शुरू करने की लागत इतनी ज़्यादा है कि हमारे कस्बे में नए फार्म खुलें इसकी सम्भावना कम ही है। आज जितनी डेयरियाँ हैं वे कई सालों पहले शुरू की गई थीं। इस अध्ययन के दौरान बच्चे निम्नलिखित सामान्यीकरणों तक पहुँचे हैं:

1. सहकारी दूध उत्पादन बाज़ार सुनिश्चित करता है।
2. सहकारी दूध उत्पादन से दूध की उच्च गुणवत्ता बनाए रखी जा सकती है।
3. वैली व्यू के लिए दूध उत्पादन आय व संरक्षण, दोनों ही दृष्टियों से फायदेमन्द है।
4. कुछ ऐसी ज़मीन भी जोती जा रही है जिसका उपयोग जल्दी ही चरागाह या जंगल के रूप में किया जाना चाहिए।
5. बेहतर यातायात, यंत्रों व वैज्ञानिक तौर-तरीकों के कारण खास प्रकार की खेती सम्भव हुई है।
6. वितरण व्यवस्था में ज़रूर कुछ गड़बड़ है, क्योंकि शहरों में कई लोगों को खरीद न पाने के कारण पीने तक के लिए दूध नहीं मिल पाता और किसानों के पास अतिरिक्त दूध बचता है जिसे वे बेच नहीं पाते।
7. दूध हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
8. गायों को अगर सही चारा मिले, उनकी बढ़िया देखभाल हो, तो वे बेहतर और अधिक दूध देती हैं।
9. दूध जब हमारे घरों तक पहुँचता है तो वह साफ व सुरक्षित होता है। यह स्थिति बनी रहनी चाहिए।

श्री राब खेल पीरियड से दस मिनट पहले ही आ गए थे, सो बच्चों को दोपहर बाद ही खेलने का मौका मिल पाया। पर इस पर किसी भी बच्चे ने कोई टिप्पणी नहीं की। पर जैसे ही श्री राब ने बात खत्म करते हुए कहा, "लगता है इतना काफी है," रैल्फ पूछ बैठा कि क्या वे हमारे साथ "लॉन्ग बॉल" खेलना पसन्द करेंगे। श्री राब बोले कि उनके पास पन्द्रह मिनट हैं। बच्चों ने कक्ष से बाहर होने में पल भर भी नहीं गँवाया। आम सहमति से श्री राब को उस दल में शामिल किया गया जिसमें खिलाड़ी कम थे। थॉमस ने उन्हें लॉन्ग बेस के पास यह कहते हुए खड़ा किया कि "आप लम्बे हैं, सो बॉल को पकड़ लेंगे और हमें हर बार सड़क की ओर दौड़ना नहीं होगा।" हमने खुशी-खुशी समय बिताया।

मैंने दूध उत्पादन के हमारे अध्ययन के महत्व के विश्लेषण की चेष्टा की। हमारे समुदाय के लोग जिन भिन्न-भिन्न तरीकों से अपना जीवनयापन करते हैं, उनमें

से एक के बारे में और उससे जुड़ी समस्याओं के प्रति बच्चे जागरूक बने हैं। उन्होंने इन समस्याओं पर अपने माता-पिता से भी बातचीत की है, इस तरह वे भी इनके प्रति जागरूक बने हैं – इस कदर कि एडवर्ड के पिता ने काउंटी कृषि सलाहकार को सुझाव देने के लिए बुलाया।

वे यह भी समझने लगे हैं कि कुछ आर्थिक समस्याएँ ऐसी हैं जो सहकारी गतिविधियों के अभाव से उपज रही हैं, तो कुछ ऐसी भी हैं जो हमारे राष्ट्र के इतिहास के क्रमिक विकास से उपजी हैं। बच्चों को अतिरिक्त उत्पादन और घोर अभाव की असंगतियाँ, श्रम के संघर्षों व मूल्य नियंत्रण आदि बातें समझ आने लगी हैं। उन्हें पता चलने लगा है कि दुनिया में बसा विशाल समुदाय हमारे छोटे से मुहल्ले को कैसे प्रभावित करता है।

वे यह देख-जान रहे हैं कि आबोहवा, भूमि की सतह तथा हमारे देश के अन्य भागों व दुनिया में यातायात के साधन हमारे समुदाय के किसी उद्योग को कैसे प्रभावित करते हैं। यह भी वे देख-समझ रहे हैं कि हमारे देश के विकास ने हम पर क्या असर डाला है। वे जन-स्वास्थ्य, खेतीबाड़ी, उद्योग व परिवहन के क्षेत्रों में हो रही वैज्ञानिक प्रगतियों को भी समझ रहे हैं।

यह सच है कि बच्चे इस वक्त इन स्थितियों के बारे में कुछ खास कर नहीं सकते, पर इन विषयों पर जो कुछ वे सीख रहे हैं उससे उनका नज़रिया बनेगा जो बड़े होने पर उनके काम को दिशा देगा। इस प्रकार के "बौद्धिकरण" को बच्चों की वास्तविक समझ के परे भी नहीं बढ़ने देना चाहिए, अन्यथा वह महज़ प्रचार या मौखिक अभिव्यक्ति बन जाता है जो खतरनाक साबित होता है।

जिन विषयों का बच्चे अध्ययन कर रहे थे, उन्हें वे समुदाय में वास्तव में देख सके। स्कूल में बिताया समय पढ़ने और चर्चा करने में लगाया गया ताकि वह उन्हें पैने अवलोकन के लिए और बाद में जो कुछ उन्होंने देखा उसे समझने के लिए तैयार कर सके। किताबों का उपयोग उन्होंने अपने अनुभवों के निहितार्थ निकालने और उन्हें विस्तार देने के लिए किया है।

बच्चों के सामाजिक सम्पर्क बेहद सीमित हैं। इस अध्ययन के दौरान की गई यात्राओं ने उन्हें सार्वजनिक शिष्टाचार का अभ्यास करने का अवसर दिया है। नक्शों का उपयोग, यात्राओं की योजना बनाना और यात्राएँ करने के अनुभव

ने उन्हें अधिक सचेत व सतर्क बनाया है। इससे उन्हें न केवल अपने तात्कालिक वातावरण में अर्थ तलाशने में मदद मिली है, बल्कि उनके वातावरण को विस्तार मिला है और उनका क्षितिज फैला है।

शुक्रवार, 29 अप्रैल

हमने जंगल में चिह्नित भूखण्ड में जो कुछ कल जाना-सीखा था, उसे फिर से देखने जाने के लिए विज्ञान के पीरियड का उपयोग किया। बच्चों को वहाँ उन्नीस सुराख मिले थे जो चूहों, साँपों, गिलहरियों या अन्य छोटे जानवरों या कीड़ों के आवास हो सकते हैं। हेलेन ने सुझाया कि हम उनके चित्र बनाएँ क्योंकि सही चित्र बनाने के लिए हमें यह भी जानना होगा कि वे जन्तु कैसे दिखते हैं, वे चौपाए हैं या शल्क वाले। वॉरेन ने सुझाया कि अगर हम किताबों की छानबीन करें तो हमें पता चल सकता है कि दरअसल हमें क्या तलाशना है। उन्होंने तय किया कि वे सारी सूचनाएँ कॉपियों में लिखेंगे। मैंने पूछा, "भूखण्ड का अध्ययन कैसे किया जाएगा? क्या तुम सभी लोग एक ही चीज़ का अध्ययन करोगे या फिर तुम समितियों में काम बाँट लोगे?" कैथरीन का मानना था कि बेहतर यही होगा कि एक-एक चीज़ का बारी-बारी अध्ययन किया जाए। इससे सभी लोग हरेक वस्तु के बारे में सब कुछ जान सकेंगे। हेलेन ने कहा, "जिसे जो पसन्द आए वह उसी का अध्ययन करे।" एल्बर्ट उठा और उसने एक लम्बा भाषण दिया, "मुझे लगता है हमें समितियों में बँट जाना चाहिए। हरेक व्यक्ति सब कुछ का अध्ययन करे इतने सप्ताह बचे ही नहीं है। अगर हम समूहों में काम करें तो हम काफी तेज़ी से चीज़ों का अध्ययन कर सकेंगे।" वह बैठ गया और तुरन्त फिर से खड़ा हो गया, "और इसके अलावा, हम एक-दूसरे को सुनकर तथा एक-दूसरे की कॉपियाँ पढ़कर अन्य चीज़ों के विषय में भी सीख लेंगे।" मेरी ने जोड़ा, "तब हरेक वह कर सकेगा जो वह करना चाहता है और हमारा समय बर्बाद नहीं होगा। इससे हमें अपने भूखण्ड में गर्मियों में जो कुछ भी दिखेगा उस सबके बारे में हम जान सकेंगे।" सब बच्चों ने अपने लिए तय किया कि वे क्या जाँचना-तलाशना चाहते हैं।

गुरुवार, 5 मई

पिछले सप्ताह बने समिति समूहों ने अध्ययन के सम्बन्ध में जो योजनाएँ बनाई थीं, उन्हें भूखण्ड में जाकर लागू किया गया। जल-जीवन समूह ने धब्बेदार

जलगोधिका को देखा, उसके चित्र बनाए, उसकी शक्ल-सूरत के बारे में पढ़ा और उसकी आदतों के बारे में सूचनाएँ इकट्ठा कीं। फूल समूह ने उन तमाम फूलों की सूची बनाई जिन्हें वे पहले से पहचानते थे। मे ने पाँच पेड़ों की विशेषताओं का अध्ययन किया। अब वह दो सफेद बलूतों में तथा जंगली चेरी और चेरी भूर्ज में अन्तर बता सकती है।

शुक्रवार, 13 मई

स्कूल वर्ष के समापन का समय हमेशा व्यस्ततम समय लगता है। एकल-शिक्षक शाला चलाने वाले प्रत्येक शिक्षक को दरअसल एक बढ़िया सचिव की ज़रूरत है जो सब कुछ दर्ज करती जाए और तब शिक्षक को कार्य की समीक्षा व योजना की फुर्सत मिल जाए।

कल और आज रात बच्चों ने *विनी द पूह* और *रॉबिन हुड* के कठपुतली नाटक किए। दोनों ही दिन दर्शक ठसाठस भरे थे। पिछले साल के नाटकों की चर्चा फैल चुकी थी, सो पास के कस्बे से भी अच्छी संख्या में लोग आए। हमें सन्तोष था कि हमने ऐसा प्रदर्शन किया जिसे कस्बे वाले भी देखने के लिए इतनी दूर आए। कई आगन्तुकों ने इस बात की प्रशंसा की कि बच्चों ने खुद को बखूबी सम्हाला था। मंच, प्रकाश व साज़ो-सामान, सबके लिए प्रबन्धक थे, अतः नाटक का मंचन कुशलता से हुआ। नाटक का मंचन प्रभावी बन सका। हर बच्चे को पुख्ता तौर पर पता था कि उसे कब और क्या करना है।

हमें मंच के पीछे से पंक्तियाँ याद दिलाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी क्योंकि जहाँ कहीं बच्चे अटके, उन्होंने स्वयं शब्द गढ़ लिए। इससे उन्होंने नाटकों को और मज़ेदार बना दिया। *रॉबिनहुड* के दूसरे दृश्य में जहाँ रॉबिनहुड और नन्हा जॉन सँकरे पुल पर मिलते हैं और उनमें बहस होती है कि किसे रास्ता देना चाहिए, रॉबिनहुड लट्ठ काटने के लिए कुछ पल के लिए पुल से गायब हो गया। पर्दे के पीछे बच्चे रॉबिनहुड के हाथों में लट्ठ पकड़ाने की कोशिश करते रहे जो उसके हाथों में ठहर ही नहीं रहा था। इसका मतलब था कि नन्हा जॉन योजना से अधिक समय तक अकेला खड़ा रहा। पर रैल्फ ने स्थिति सम्हाली। पहले नन्हा जॉन अधीरता से पैर ठकठकाने लगा। फिर उसने अपना सिर खुजलाया। अन्ततः वह पुल पर इतनी जीवन्तता से आगे-पीछे चलने लगा कि दर्शक तो पगला ही गए। रैल्फ को एक भी शब्द नहीं बोलना पड़ा। उसकी पुतली के

हावभाव पूरी बात कह रहे थे। इसके बाद तो दर्शकों की खूब भागीदारी हुई। बच्चों ने भी इसे भाँप लिया और इतने जी-जान से मंचन किया कि मैं हैरान रह गई। कस्बे में लोहे-लक्कड़ वाली दुकान का मालिक तो उत्साह में अपनी जाँघें ठोकने लगा, हँसी से लोटपोट हो गया और पास बैठे दर्शकों को कहने लगा कि इतना उम्दा प्रदर्शन उसने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार देखा है।

बच्चों ने रॉबिनहुड के युग की पाँच अँग्रेज़ी गाथाएँ भी गाईं। ये गीत बड़े लोकप्रिय हो गए हैं।

नाटक समाप्त हुआ तो सभी दर्शक पर्दे के पीछे बढ़ गए और बच्चों ने उन्हें कठपुतलियाँ चलाकर दिखाईं। उन्होंने शान नहीं बघारी और तारीफ को सौम्यता से स्वीकारा। वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे! अब उनमें एक नया आत्मविश्वास है जो पहले कभी नहीं था। संयोगवश, हमने साठ डॉलर बना लिए!

सोमवार, 16 मई

कठपुतली मंचन सलटने के बाद हम वार्षिक कस्बाई नाटक दिवस की तैयारी में जुट गए। हमने *रिप वैन विंकल* को नाटक की शक्ल देने की सोची। यह खुले में मंचन के लिए सही है क्योंकि इसका काफी हिस्सा मूकाभिनय से प्रस्तुत किया जा सकता है। गीत-संगीत, नृत्य, खेल-कूद और करतबों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सब बच्चे साल भर सीखते रहे हैं और यह उसी में से लिया जा सकता है। इस तरह इसमें सभी बच्चे शिरकत कर सकते हैं।

इस बसन्त छोटे बच्चे अपने लिए नए खेल ईजाद करते रहे हैं। आज उन्होंने अपने ताज़ा खेल के बारे में बताया और वह मुझे अच्छा लगा। उन्होंने इसे "पेड़ के तने के इर्द-गिर्द" नाम दिया है।

गुरुवार, 19 मई

आज भाग्य ने अचानक साथ दिया। हम अपने भूखण्ड के अध्ययन में मशगूल थे कि वॉरेन उत्तेजना में काँपता हुआ दौड़ा आया और बोला, "जल्दी से आइए। आकर देखिए तो सही कि एल्बर्ट को क्या मिला है।" हम उसके पीछे-पीछे दौड़े। देखा कि एल्बर्ट जंगल में एक खुली-सी जगह पर खड़ा है और उसके पास कुछ

है जो पंखों का ढेर-सा लग रहा है। हम ठीक से देखने और पास गए। वह पक्षी शिशु ही था, पर काफी बड़ा, एल्बर्ट के दोनों हाथों के बराबर। पंख उसके काले और सफेद थे और कलगी लाल थी। उसकी जीभ, पूँछ और पंजों से लगा कि वह कठफोड़वा है, पर ऐसे कठफोड़वे को हमने पहले कभी देखा नहीं था। हम ऊपर से आती ज़ोरदार चीखों से चौंक पड़े। उसकी माँ हमें डाँट रही थी और अधिक निकट आने से डरती हुई आगे-पीछे उड़ रही थी। एल्बर्ट ने पक्षी शिशु को सावधानी से धरती पर रख दिया और हम सब यह देखने के लिए कि आगे क्या होता है पीछे हट गए। नन्हा पक्षी फुदकता हुआ एक टेढ़े उगे पेड़ के तने पर चढ़ गया और धीमे-धीमे ऊपर बढ़ने लगा। उसकी माँ उसके पीछे-पीछे चलने लगी। हम पक्षियों को उनके आश्रय स्थल की शान्ति में छोड़ लौट आए। शाला भवन पहुँचते ही हमने अपनी पक्षी पुस्तक निकाली और पाया कि हमारा परिचय कलँगीदार कठफोड़वे से हुआ था जो काफी बिरला पक्षी है।

सोमवार, 6 जून

पिछले दो सप्ताह फुर्र से उड़ गए। हमारा काफी समय नाट्य दिवस के लिए *रिप वैन विंकल* की तैयारी में लगा। नाटक अब खासा चुस्त बन पड़ा है।

पिछले सप्ताह हमने अपनी मेज़ों की मरम्मत का काम शुरू किया। बच्चों ने काँच के टुकड़ों पर टेप चिपकाया ताकि हाथ न कटें, और उनसे वार्निश की पुरानी सतह खुरच डाली और लकड़ी की सतह को पूरी तरह सपाट बना डाला। उन्होंने मेज़ों को पहले खुरदुरे और फिर बारीक रेगमाल से रगड़ा। हमने इस बार गहरे-बलूत रंग का वार्निश लगाया। अधिकांश मेज़ें पूरी हो चुकी हैं और बिलकुल नई-ताज़ा लग रही हैं। बच्चों को अपने कौशल पर बड़ा गर्व हो रहा है।

जब हम मेज़ों को रंग रहे थे, बच्चे हमारे कक्ष में और आवश्यक सुधार-मरम्मत की बात भी कर रहे थे। उन्हें लगता है कि सबसे पहले तो उन्हें किताबों की अधिक अलमारियों की ज़रूरत है। पुस्तकालय प्रभारियों को उन्हें व्यवस्थित रखने में बेहद परेशानी होती है क्योंकि किताबों को तरतीब से रखने की कोई जगह ही नहीं है। हमें अपने संग्रहालय की वस्तुओं को करीने से सजाने और बच्चों के खिलौने रखने की जगह भी चाहिए। लड़कों का कहना था कि यह सब

स्कूल के समय में नहीं किया जा सकता क्योंकि इससे शेष गतिविधियों में बाधा आएगी, कमरा देर तक अस्तव्यस्त रहेगा, और सच तो यह है कि ऐसे काम के लिए लम्बे समय तक निर्बाध जुटे रहना पड़ता है। हमने तय किया कि यह सब स्कूल खुलने से पहले अगस्त में किया जाए, जब मैं भी ग्रीष्म शाला से लौट आऊँ।

शुक्रवार, 10 जून

कस्बाई नाट्य दिवस पर हमारा *रिप वैन विंकल* का नाटक लोगों को पसन्द आया। बाहर खुले में मंचन बड़ा सटीक था। सारे बौने पात्र अपनी रंग-बिरंगी लम्बी टोपियों में जंगल से निकले, बाड़ लाँघकर आए और व्यस्त चूहों की तरह इधर-उधर घूमते रहे। श्रीमती वैन विंकल के रूप में कैथरीन ने अपनी कलाकारी फिर से दर्शाई, जो दर्शकों में लोकप्रिय सिद्ध हुई। रिप के साथ खेलते नन्हे बच्चे अपने स्वाभाविक रूप में थे और थॉमस ने रिप को प्यारे चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया। स्कूल सत्र को यों समाप्त करना सुखद था।

इस वर्ष की मेरी दैनन्दिनी साफ दर्शाती है कि सभी लड़के-लड़कियों की ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश में मुझे कितना जूझना पड़ा है। परन्तु मिस एवरेट ने लगातार स्थिति का विश्लेषण व मूल्यांकन करने में मेरी मदद की और मुझे लगता है कि मैंने कुछ और सीखा है और मैं जानती हूँ कि हमने कुछ हासिल भी किया है।

मेरा पक्का विश्वास है कि लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था ही सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए तमाम बाधाओं के बावजूद मैंने हमारे सामूहिक दैनिक जीवन में लोकतांत्रिक तरीके से सोचने और काम करने का विकास करने की कोशिश की है। हम इस दिशा में कामयाब भी रहे हैं, क्योंकि विगत साल के हमारे काम पर नज़र डालने पर मुझे लगता है कि हमारे काम का मुख्य लक्षण सामूहिकता की भावना है जो हममें पनपी है। लोकतांत्रिक भागीदारी की भावना भी लगातार बढ़ी है। बच्चे यथासम्भव स्कूली जीवन के तमाम दायित्वों और ज़िम्मेदारियों को निभाने लगे हैं। हार्प ने जिसे "दुनिया के काम को सहकार के साथ करने की क्षमता व रुचि तलाश पाना और उसमें आनन्द लेना" कहा था, मुझे लगता है कि हम वास्तव में उस दिशा में बढ़ रहे हैं।